चन्दामामा

अक्तूबर १९६५

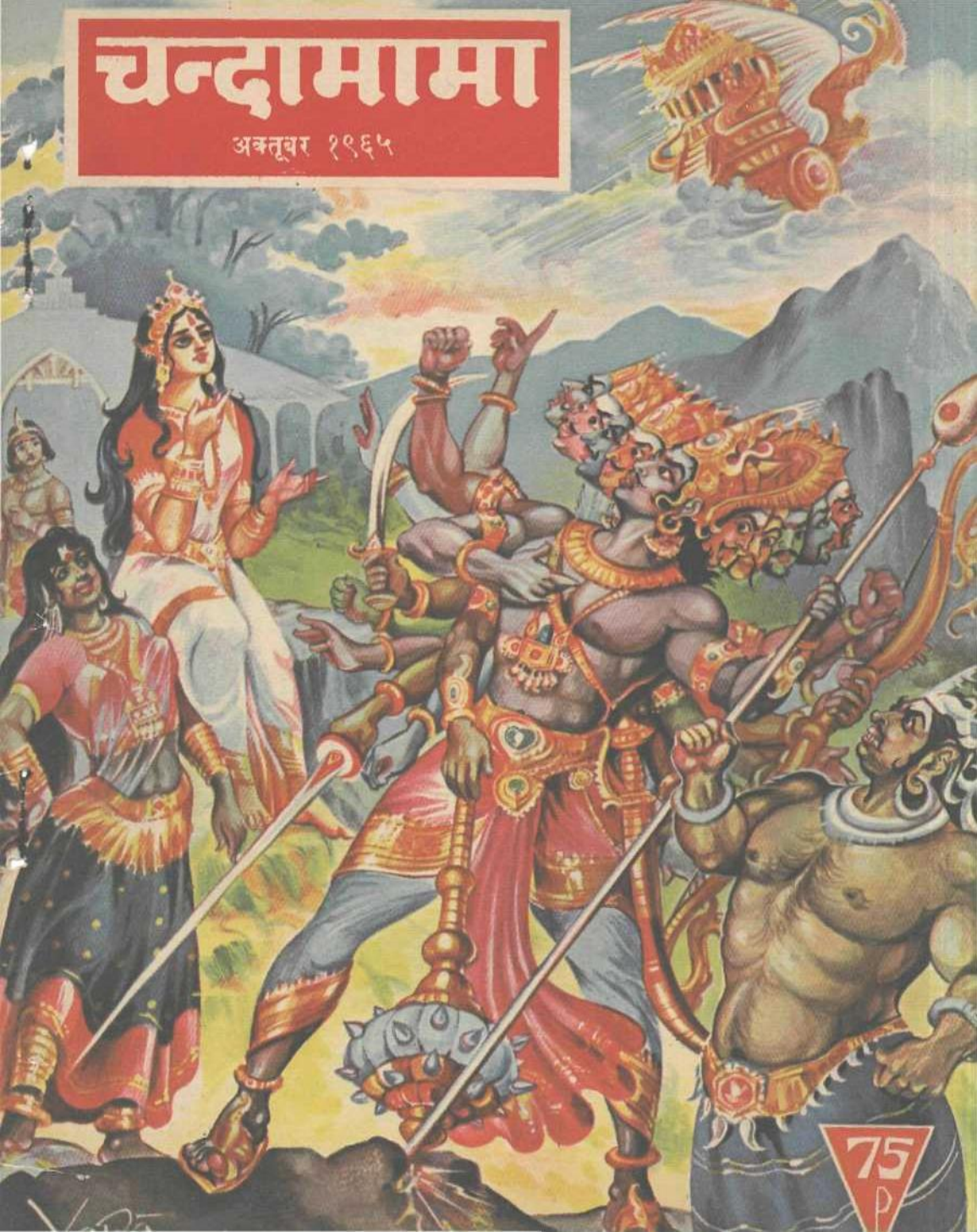

75 P

For the first time in India the revolutionery electronic engraving machine in action

VARIO KLISCHO GRAPH

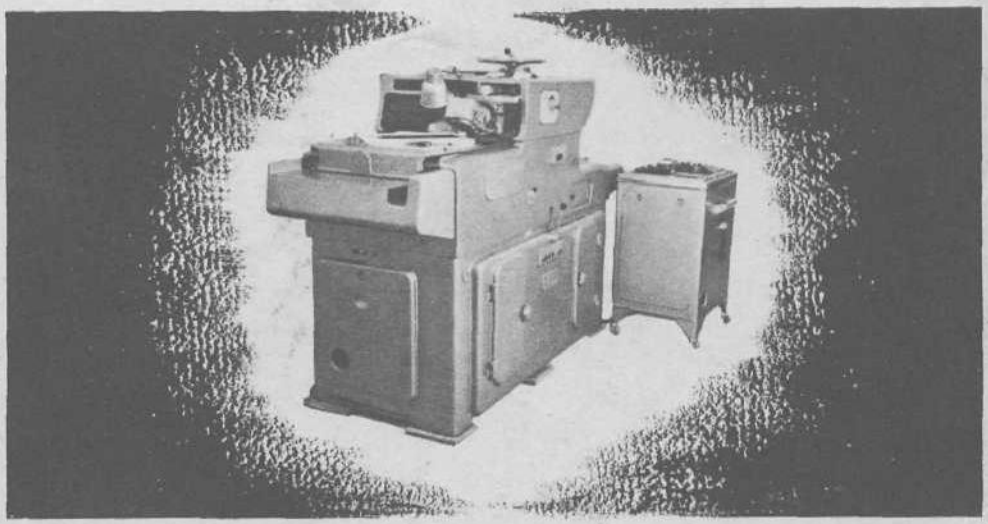

WHAT IT MEANS TO YOU

Block making time reduced from days to a few hours ■ Electronic control of gradation and detail sharpness ■ Electronic adjustment *of colour correction*

CHANDAMAMA PRESS - CHANDAMAMA BUILDINGS - MADRAS-26

दुधमुँहे
बच्चों के लिये
डाबर
की नई देन....

डाबर
(डा० एस० के० बर्म्मन) प्राइवेट लि०,
कलकत्ता-२९

चन्दामामा

अक्तूबर १९६५

संपादकीय	... १	गंगा का गर्व भंग	... ३८
भारत का इतिहास	... २	गहनों का बक्सा	... ४३
नेहरू की कथा	... ५	उत्तरकाण्ड (रामायण)	... ४९
नवाबनन्दिनी (धारावाहिक)	९	शुम्भ निशुम्भ	... ५७
हरजाना	... १७	संसार के आश्चर्य	... ६१
ब्रह्मा की गाँठ	... २७	फ़ोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता	... ६४
घास का कुड़ता	... ३३		

अल्बो-सांग

सभी उम्र के लिए एक आदर्श टॉनिक

पूर्ण स्वस्थ रहने के लिए आपको अल्बो-सांग की जरूरत पड़ेगी। क्यों कि अल्बो-सांग में ऐसे विशेष तत्व होते हैं जो युवकों और प्रौढ़ों के शरीर को स्वस्थ बनाते हैं। अल्बो-सांग आज ही लीजिये, हर रोज लीजिये और आप हमेशा स्वस्थ बने रहेंगे।

जे. एण्ड जे. डीशेन

हैदराबाद (आं. प्र.)

२५ से अधिक वर्षों से लोकप्रिय

सोल
डिस्ट्रिब्यूटर्स:
जे. एल. मोरिसन,
सन एण्ड जोन्स
(इण्डिया) प्राइवेट लि.
बम्बई - दिल्ली - मद्रास
कानपुर - कलकत्ता

Asha

आशा स्नो, फेस पाउडर, काजल तथा अन्य सौंदर्य प्रसाधन

Unique-M-12-HD

सारे परिवार के स्वास्थ के लिये फॉसफोमिन

फॉसफोमिन विटामिन बी काम्प्लेक्स तथा मल्टिपल ग्लियसरोफासफेट से युक्त एक उत्कृष्ट टॉनिक है जो आपके परिवारको बलवान खुश और स्वस्थ रखेगा। फॉसफोमिन के सेवनसे थकावट और कमजोरी का नामोनिशान नहीं रहेगा। फॉसफोमिन थकावटको मिटाता है। भूक बढाता है। आन्तरिक बल बढाता है। शरीर को बलवान बनाता है। हर फल के स्वादवाले विटामिन टॉनिक... फॉसफोमिन से आपके सारे परिवारका स्वास्थ बना रहेगा।

SQUIBB A century of experience builds faith

Shilpi SC-13

विक्स वेपोरब तुरन्त आराम पहुंचाता है...
आपका बच्चा आसानी से सांस ले सकता है...वह रात भर आराम से सो सकता है।

आपके बच्चे की सुख-सुविधा आप पर ही निर्भर है। इस लिए जब आपके बच्चे में सर्दी-ज़ुकाम के आरम्भिक लक्षण दिखायी दें, जैसे नाक का बहना, आंखों से पानी गिरना, गले का बैठ जाना, सांस लेने में तकलीफ़, तो विक्स वेपोरब मलिये।

विक्स वेपोरब आपके बच्चे के सर्दी-ज़ुकाम का सर्वोत्तम इलाज है क्योंकि यह सर्दी से प्रभावित उन सभी भागोंपर, जैसे नाक, छाती और गले में, जहां सर्दी की पीड़ा सबसे ज़्यादा होती है, असर करता है और आपके बच्चे की कोमल त्वचा को इससे तनिक भी क्षति नहीं पहुंचती।

बस विक्स वेपोरब मलिये और अपने बच्चे को कम्बल ओढ़ा कर आराम से बिस्तरपर सुला दीजिये। विक्स वेपोरब अपना काम करता रहेगा। जबकि आपका बच्चा रात भर चैन की नींद सोता रहेगा। सुबह तक सर्दी-ज़ुकाम की पीड़ा जाती रहेगी और आपका लाडला मुन्ना स्वस्थ और हंसता-खेलता उठेगा।

विक्स वेपोरब ३ साइज़ में

चन्दामामा

अगला अंक

सभी भाषाओं में दीपावली विशेषांक होगा....

★ अधिक पृष्ठ।
★ नई मनोरंजक कहानियाँ।
★ आकर्षक वॉशकलर के चित्र।
★ सुशोभित नये ढँग में रंगीन मुख-चित्र।
यह अंक अत्यंत मनोहर दिखाई देगा।

★

इस अंक का दाम १ रुपया

पाठक अपनी प्रति के बारे में पहिले
ही एजन्ट को कृपया सूचना दें।

★

आप अपनी पसन्द के माध्यम द्वारा अपनी बिक्री
का संदेश प्रत्येक परिवार को भेज सकते हैं।

★

विवरण के लिए लिखिए:

चन्दामामा पब्लिकेशन्स

वडपलनी :: मद्रास-२६

साठे

बिस्कुट

इतने स्वादिष्ट कि बस पूछिए ही नहीं !

गृहतुल्य निवास और स्वादिष्ट भोजन के लिए

न्यू माड़र्न होटल

शाकाहारी - बोर्डिन्ग - लाज्ज़िंग - रेस्टोरेंट

डायगनल रोड़, विश्वेश्वरपुरं, बेन्गलोर - ४.

(मिनर्वा सर्कल के समीप)

कमरे सुन्दर रूप से सज्जित, दिन रात बहता ठंड़ा और गरम पानी

डिन्नर और टी पार्टी के लिए विशेष कमरे भी हैं।

फोन: ७२८४९ और २७६६०

एक मशहूर दवा

६० से भी ज्यादा वर्षों से

जम्मी का लिवरक्योर

बच्चों के यकृत व प्लीहा विकारों की मशहूर दवा

जम्मी वेंकटरमण्या एंड सन्स, मद्रास - ४

शाखाएं :
बम्बई - ४; कलकत्ता - ७;
दिल्ली - ६; नागपुर - १;
लखनऊ; पटना - ४; आदि।
JV-17 (N) HIN

बच्चे पाठशाला में जितना सीखते हैं, उस से कितना ही अधिक वे खेल खिलौनों द्वारा प्रसन्नता से ग्रहण कर लेते हैं। 'राय' के खिलौने शिक्षात्मक खिलौने हैं और बच्चों के मनोरञ्जन का हर पहलू उन में आ जाता है। इस लिये यदि आप अपने बच्चे को पढ़ाना

नन्हे मुन्नों के मनचाहे उपहार

RAI TOYS

लिखाना और प्रसन्न रखना चाहते हैं तो इसे 'राय' के खिलौने ही दीजिए। विशेष जानकारी के लिए ५० न० पै० (डाक टिकटें) डाक खर्च भेज कर हमारा सचित्र ५० पृष्ठीय विस्तृत सूचीपत्र मंगवाएं।

शिक्षात्मक खिलौने

मेको

जगत-प्रसिद्ध खेल "MECCANO" के आधार पर बनाया गया यह खिलौना बच्चों को इन्जीनियर बनाने में सहायक सिद्ध होता है। इस ३ डी माडल से असंख्य नमूने तैयार किए जा सकते हैं। ९ से १२ तक चार साइज़ों में बनता है।

८.०० १२.०० १७.५० २८.००

हमारा भारत

लकड़ी के टुकड़ों से बना हुआ भारत का नक्शा बालकों को सरलता से भारत के सारे प्रदेशों के नाम, माप तथा उनकी राजधानियों के नामों का पूर्ण ज्ञान देता है हिन्दी तथा अंग्रेजी में २ साइज़ों में बनता है ४.२५ ५.००

लैदर क्राफ्ट

चमड़े की वस्तुएं बनाने का एक आनन्ददायक खेल जिससे भिन्न-भिन्न प्रकार के बटुवे, बैग, टिकटें रखने का खाना, कंघीदान, फिल्म रखने का बक्स, कैंची का खाना इत्यादि बहुत आसानी से बनाये जा सकते हैं। ५.००

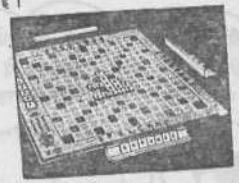

स्पैल क्राफ्ट

जगत्-प्रसिद्ध शब्द-शृंखला व शब्द-संयोजन का खेल। लाखों व्यक्तियों का खेल और बहुतों का नशा। होशियारी का सुगम खेल। चार तक खेल सकते हैं। केवल बड़े बच्चों व वयस्कों के लिए। १५.२५

इलैक्ट्रिक ब्रेनो

बड़े-छोटे सब ही इसे पसन्द करते हैं। क्योंकि यह हरएक को अद्भुत नई २ बातें बताता है। सवाल-जवाब इस प्रकार लगाये गये हैं कि यदि सही स्थान पर पिन लगाया जायेगा तो बल्ब तुरन्त जग कर उत्तर के सही होने का प्रमाण देगा। ८ नम्बरी में बनता है। नं० ३००, ६००, १२०० के मूल्य दिए गए हैं, शेष जानकारी के लिए लिखें। ३.०० ३.५० ३.७५

नरसरी स्लेट

वर्णमाला, गिनती तथा अनेकों प्रकार के चित्रों के कार्ड दिये गए हैं जिन्हें बच्चा स्लेट के शीशे के नीचे रख कर बड़ी आसानी से ट्रेस कर सकता है ४.५०

जौली पेंट बाइ नम्बर्ज

चित्रकारी को अत्यन्त सरल बनाने वाला उपयोगी खेल जिसमें चित्रों तथा रंगों की शीशियों पर दिये हुए नम्बरों की सहायता से बालक चित्र आसानी से बनाकर एक आदर्श चित्रकार होने का गर्व अनुभव करता है। ३.५०

शीला नर्स

इस खेल द्वारा छोटी बालिकाएं अपने आप को नर्स बना कर नाटकीय ढंग से एक विशेष प्रकार का गर्व अनुभव करती है। ८.००

इसे काटिये और हमें नीचे लिखे पते पर भेजिये। हमारी "कूपन प्राक्टिड स्कीम" में शामिल होकर प्रति तीन खिलौनों पर एक रुपया बचाइये। ऊपर लिखे मूल्य में डाक खर्च व पैकिंग सम्मिलित है।

नाम ..... उम्र .....

पता .....

.....

हस्ताक्षर संरक्षक..... (मूर्तियां पृथक् पत्र पर भी भेज सकते है।) .....

खिलौनों के नाम

.....

.....

.....

राय टायेज़ इण्डस्ट्रीज़ नाज़ार सीताराम दिल्ली-६

दिलीप और साथी

पिकनिक में गये !

इस बार की पिकनिक का जवाब नहीं, मज़ा आ गया !

लो, यह आईसक्रीम चख कर तो देखो, कितना अच्छा है !

अरे हाँ, अब तो घर लौटने का समय हो गया !

स्कूल बस

SCHOOL BUS

हु-ऊ-श ! अरे चक्के से हवा गायब ! पंकचर !

अब क्या होगा ?

तुम्हें घर तक छोड़ने में तो अब काफी समय लगनेवाला है। इस धुँधली रोशनी में तो कुछ देखना भी मुश्किल है।

फ़िक्र मत करो ड्राइवर साहब ! हमारे 'एवरेडी' टॉर्च से काम लीजिये।

वाह ! वाह !

चलो, पंकचर तो बन गया आखिर ! दिलीप, तुम्हें बहुत-बहुत शुक्रिया ! चलो, चलें।

ड्राइवर को हमेशा 'एवरेडी' टॉर्च अपने पास रखना ही चाहिये !

JWTUC 1434

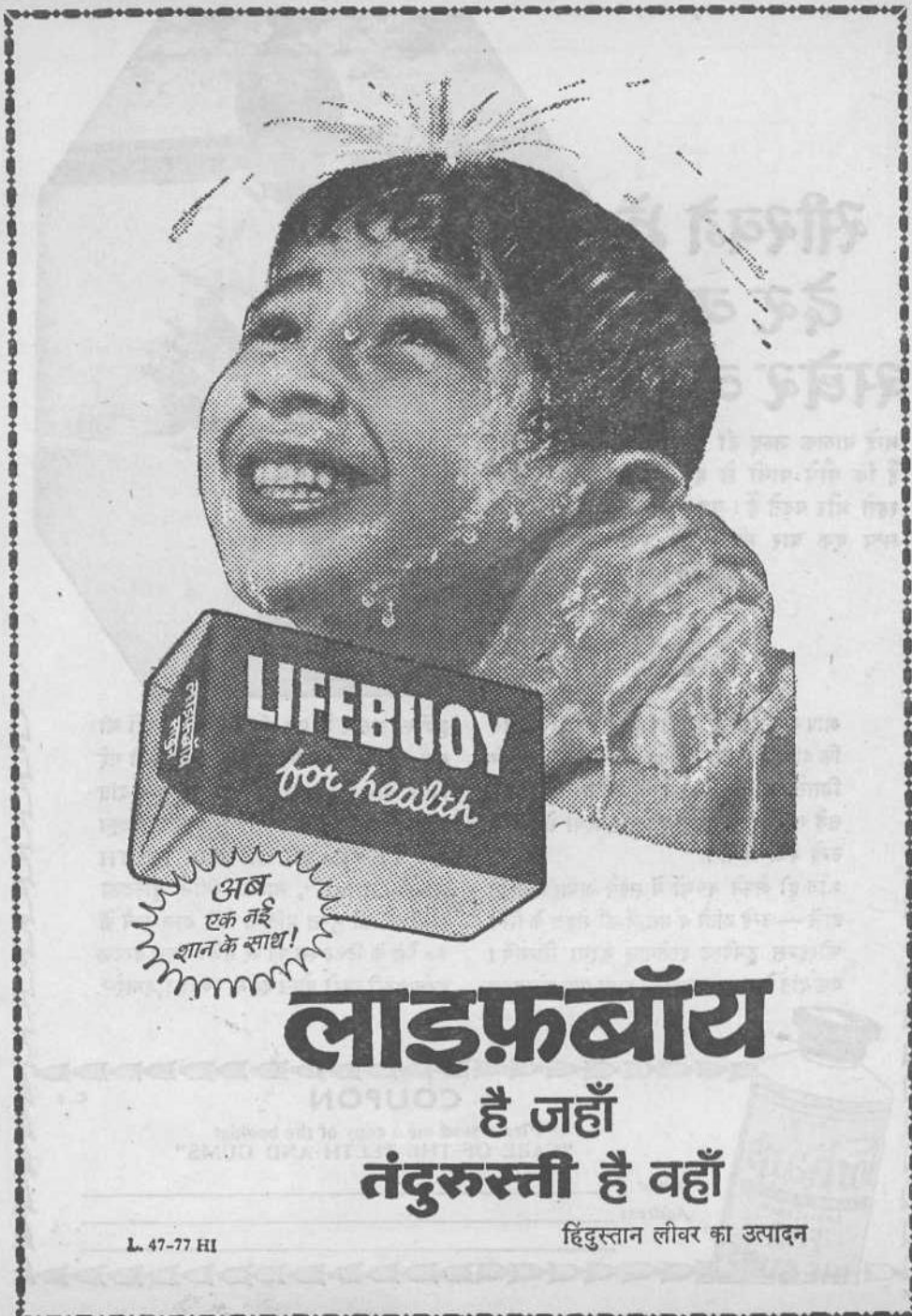
LIFEBUOY
for health
अब
एक नई
शान के साथ!
लाइफ़बॉय
है जहाँ
तंदुरुस्ती है वहाँ
L. 47-77 HI
हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

सीखने में देर क्या सवेर क्या!

नन्हे बालक जल्द ही सीख जाते हैं कि पौधे पानी से ही जिन्दा रहते और बढ़ते हैं। यह साधारण सत्य एक बार सीखने के बाद भूलता नहीं।

आप अपने बच्चों को अब दूसरा सबक सिखाइये कि दांतो व मसूढ़ों की रक्षा कैसे करनी चाहिये जिससे वे बड़े होकर आपका आभार मानेंगे कि सड़े गले दांत व मसूढ़ों की बीमारियों से आपने उन्हे बचा लिया।

आज ही अपने बच्चों में सबसे अच्छी आदत डालें — उन्हे दांतो व मसूढ़ों की सेहत के लिये फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना सिखायें। एक दांत के डाक्टर द्वारा निकाला गया फोरहन्स टूथपेस्ट संसार में एक ही है जिसमें मसूढ़ों की रक्षा के लिये डा. फोरहन्स द्वारा निकाली गई विशेष चीजें हैं। इसके हमेशा इस्तेमाल से दांत सफेद चमकने लगते हैं और मसूढ़े मजबूत होते हैं। "CARE OF THE TEETH AND GUMS", नामक रंगीन पुस्तिका (अंग्रेजी) की मुफ्त प्रति के लिये डाक-खर्च के १० पैसे के टिकट इस पते पर भेजें: मॅनर्स डेन्टल एडवायजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-१.

COUPON C.1

Please send me a copy of the booklet
"CARE OF THE TEETH AND GUMS"

Name _____

Address _____

_____

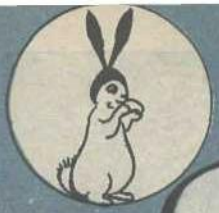

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

कई पाठकों ने आश्चर्य प्रकट किया है कि कब तक "बेताल की कहानियाँ" चलती रहेंगी।

"बेताल की कहानी" एक विधा सी है, जिसमें हम कई बार कल्पित कहानियाँ भी दे चुके हैं, जो मूल कहानियों की तरह हैं, परन्तु बहुत भिन्न हैं। केवल समानता यही है कि उन सब में एक समस्या है और अन्ततः समस्या का निवारण है। यही इन कहानियों की आकर्षक रोचकता है।

जब तक हमारे पाठक इन कहानियों में विशेष रुचि दिखाते रहेंगे, हम तब तक यथाशक्ति उनको देने का प्रयत्न करेंगे।

वर्ष: १७ अक्तूबर १९६५ अंक: २

CHITRA

जब औरन्गजेब दक्खिन में वायसराय नियुक्त हुआ था, तब उसकी आयु १८ वर्ष की थी। उसने साम्राज्य के शत्रुओं का दमन करने की कोशिश की। सूरत समुद्र तट और खान देश के बीच के चावलाना को पकड़कर, उसने कुछ किले शाहजी से ले लिये।

दक्खिन में वायसराय का कार्य करते हुए औरन्गजेब को कई कठिनाइयाँ झेलनी पड़ीं। पहिली कठिनाई तो पैसे की तंगी थी। इससे अधिक मुख्य था, दारा शिकोह के नेतृत्व में औरन्गजेब के खिलाफ गुटबन्दी का किया जाना। शाहजहाँ दारा शिकोह को बहुत चाहता था। १६४४ में औरन्गजेब ने वायसराय के पद से इस्तीफा दे दिया। वह १६४५ फरवरी में गुजरात का गवर्नर नियुक्त किया गया।

औरन्गजेब अपने बड़े भाई की शत्रुता के कारण दिल्ली में न रह सका। १६५३ के प्रारम्भ में, दूसरी बार वह दक्खिन में वायसराय बनकर आया। उस समय वहाँ का शासन गड़बड़ाया हुआ था। आर्थिक स्थिति बड़ी दयनीय थी। अपने साथ आये हुए दिगन मुर्शिद कुलीखान की मदद से, औरन्गजेब ने ऐसी कर व्यवस्था की कि जिससे, किसान और हुकूमत को फायदा हो। इस कर व्यवस्था से, दक्खिन में सम्पन्नता बढ़ी। १६५८ तक औरन्गजेब के ईलाके में, कहते हैं, एक सेन्ट भी बंजर भूमि नहीं रह गई थी।

१६३६ से गोलकोण्डा, दिल्ली के आधीन था। पर कभी कर ठीक तरह नहीं दे रहा था। जब गोलकोण्डा के सुल्तान ने अपने मन्त्री मीर जुम्ला को ठीक तरह न

देखा, तो वह मुगलों की शरण में चला गया। गोलकोण्डा पर हमला करने के लिए औरन्गजेब को दो बहाने मिल गये।

मीर जुम्ला का असली नाम मोहम्मद समाद था। वह फारस देश का व्यापारी था। उसने हीरे, जवाहरात बेचकर, बहुत-सा रुपया जमा किया। फिर गोलकोण्डा के सुल्तान अब्दुल्ला कुतुब शा के काम पर लग गया। उसने असाधारण बुद्धिमत्ता दिखाई। युद्ध तन्त्र में भी वह प्रवीण था। शासन में भी उसने कुशलता दिखाई। वह इसलिए जल्दी ही प्रधान मन्त्री बना दिया गया। इस पद पर वह निरंकुश शासन करने लगा। यही नहीं, उसने युद्ध करके, कर्णाटक में अपने लिए बहुत-सा प्रान्त हड़प लिया। उसका नाम राजा नहीं था, पर उसके वे सब ठाट थे, जो राजाओं के होते हैं। ३०० मील लम्बे, ५० मील चौड़े इस प्रान्त से, उसकी हर साल ५० लाख रुपये आमदनी होती थी। उससे उसने अपनी सेना बना ली। उस सेना के पास तोपें भी थीं। प्रति रोज मीर जुम्ला की शक्ति को बढ़ता देख, सुल्तान घबराया। उसने उसके लड़के

मुहम्मद अमीन खान और उसके परिवार को गिरफ्तार करके, मीर जुम्ला को नीचा दिखाना चाहा। मीर जुम्ला ने दिल्ली के बादशाह और औरन्गजेब से साजिश की।

औरन्गजेब के लड़के मुहम्मद सुल्तान ने पिता की आज्ञा पर १६५६ जनवरी में, हैदराबाद पर हमला किया। ७ फरवरी को औरन्गजेब ने स्वयं गोलकोण्डा पर हमला किया। मुगल सैनिकों ने देश को लूटा। औरन्गजेब गोलकोण्डा को मुगल सल्तनत में मिला लेना चाहता था। परन्तु दारा शिकोह ने यह न होने दिया। उसने

अपने पिता द्वारा हुक्म भिजवाया कि गोलकुण्डा का घेरा उठा दिया जाय। ३० मार्च १६५६ में घेरा उठा दिया गया।

गोलकोण्डा के सुल्तान ने बादशाह को हरजाने के तौर पर १० लाख रुपये नगद और रंगीर का जिला दे दिया। सुल्तान की लड़की का, औरन्गजेब के लड़के मुहम्मद सुल्तान के साथ परोक्ष में विवाह कर दिया गया। जवानी यह समझौता भी हो गया कि सुल्तान के बाद उसका दामाद गद्दी पर आये। जल्दी ही, मीर जुम्ला, गोलकोण्डा राज्य का प्रधान मन्त्री नियुक्त किया गया।

अब बीजापुर ही बाकी रह गया था। ४ नवम्बर, १६५६ को आदिल शा मर गया। उसका १८ वर्ष का लड़का गद्दी पर आया। औरन्गजेब ने पिता को लिखा कि बीजापुर पर आक्रमण करने के लिए उसको अनुमति दी जाय, क्योंकि यह लड़का मरे हुए सुल्तान का लड़का न था। न मालूम किसका था। बीजापुर के गद्दी के वारिस के बारे में दिल्ली का कोई वास्ता न था। यह युद्ध बिल्कुल अनुचित था। इसमें औरन्गजेब की मीर जुम्ला ने मदद की। १६५७ जनवरी में आक्रमण प्रारम्भ हुआ। मार्च के अन्त में बीदर का किला, अगस्त १ को कल्याणी का किला उसके हाथ आ गये।

१६५७ सितम्बर में, शाहजहाँ बीमार पड़ा। तुरत उसके लड़कों में गद्दी के लिए झगड़ा होने लगा। शाहजहाँ बीमारी से ही नहीं, अपमान से और पुत्रों के युद्ध के कारण हुए मानसिक व्यथा से मर गया।

नेहरू की कथा

[१५]

१९२१ देश में स्थिति विकट हो गई। जैसे जैसे आन्दोलन बढ़ता जाता था, वैसे वैसे अधिकारियों ने दमन करना शुरु कर दिया। प्रमुख कान्ग्रेसी नेताओं पर पाबन्दियाँ लगा दी गईं। उनके कहीं कहीं जाने पर मनाई कर दी गई। "सरहद गान्धी" अब्दुल गफार खान को पकड़ लिया गया और उनको तीन साल की सज़ा दे दी गई।

कई ने, जिनको सरकारी खिताब मिले हुए थे, उन्हें छोड़ दिये। विद्यार्थी "इन्लिश" स्कूलों से, कोलेजों से बाहर चले आये। इनमें कुछ "राष्ट्रीय" विद्यालयों में प्रविष्ट हो गये।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगौर ने सत्याग्रह का और विद्यालयों के बहिष्कार का विरोध किया। फिर भी आन्दोलन जोर पकड़ता जाता था। १९२७ जुलाई में, अखिल भारत कान्ग्रेस कमेटी ने विदेशी वस्त्र के बहिष्कार और खादी उत्पत्ति की वृद्धि के लिए प्रस्ताव पास किया। शराब की दुकानों पर पिकटिन्ग होने लगी। जुलाई के आखिरी दिन गान्धीजी ने अपनी अध्यक्षता में विदेशी वस्त्रों का दहन किया।

ब्रिटिश अधिकारी एक एक कान्ग्रेस नेता को गिरफ्तार करने लगे। सितम्बर के आरम्भ में अली भाई गिरफ्तार किये गये। उनको दो साल की सज़ा दी गई। सरकार ने धमकी तो दी कि जवाहरलाल नेहरू को उत्तेजनात्मक भाषणों के लिए गिरफ्तार किया जाये, पर वे इतनी जल्दी पकड़े नहीं गये।

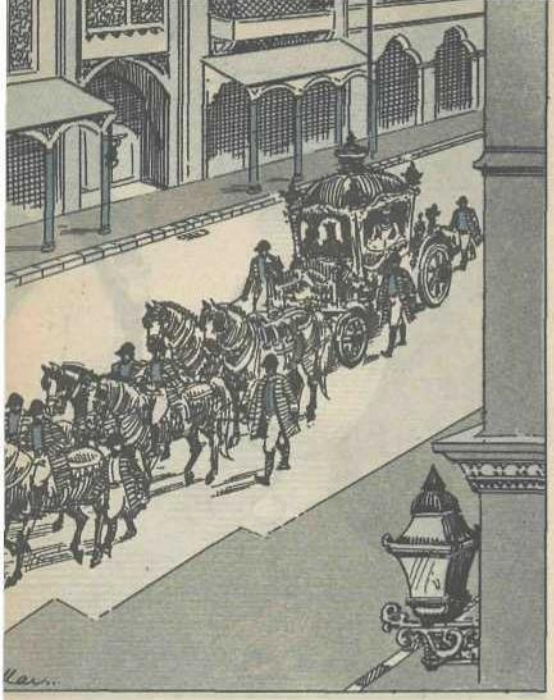

इस तरह की कठिन परिस्थिति में ब्रिटिश सरकार ने वेल्स युवराज (ड्यूक आफ विन्डसर) के दौरे की व्यवस्था की। इस तरह उनका ख्याल था कि लोगों में राजभक्ति बढ़ेगी। कान्ग्रेस ने घोषणा की कि युवराज के भ्रमण का बहिष्कार किया जाय। इसमें ब्रिटिश सिंहासन का अपमान न था, चूँकि युवराज के पर्यटन के पीछे राजनैतिक कारण थे।

१७ नवम्बर को वेल्स युवराज बम्बई में उतरा। तुरत हड़ताल वगैरह शुरु हो गये। ये हड़ताल तीन दिन तक चलते रहे। पोलीस ने गोली चलायी। पचास आदमी मारे गये। करीब ४०० आदमी घायल हुए।

"स्वराज्य में दुर्गन्ध आ रही है" गान्धीजी ने यह कहकर अनशन प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने कहा—"जब तक शान्ति नहीं स्थापित होती, तब तक मैं उपवास करूँगा।"

शान्ति शीघ्र ही स्थापित हो गई। नवम्बर २२ को गान्धीजी ने अपना उपवास तोड़ दिया। परन्तु जहाँ जहाँ युवराज जाता, वहाँ वहाँ मानों जीवन स्थिर-सा हो जाता। दुकानें बन्द कर दी जातीं। स्कूल बन्द कर दिये जाते। सड़कें सुनसान हो जातीं।

यह देखकर सरकार ने अन्धाधुन्ध नेताओं को गिरफ्तार करना शुरु कर दिया। १९ नवम्बर को कान्ग्रेस कार्यालय, खिलाफत कार्यालयों को गैर कानूनी करार दिया गया। दिसम्बर के आरम्भ में कान्ग्रेस अध्यक्ष चित्तरंजन दास आदि अरेस्ट किये गये। "भारत देश ही एक बड़ी जेल है। कान्ग्रेस का कार्यक्रम चलता रहना चाहिए। मैं गिरफ्तार हो गया तो क्या

हो गया? मर जाऊँ या जिन्दा रहूँ.... इसमें क्या रखा है?" दास ने एक सन्देश में कहा।

पंजाब, बिहार, यू. पी. आदि प्रान्तों में आम गिरफ्तारी हुई। ५० कान्ग्रेसी नेता, जो एक सभा में शामिल होने आये थे, एक ही साथ गिरफ्तार कर लिये गये। जवाहर कहते हैं कि कई ऐसे मौके थे जब लोग सवेरे दफ्तरों में काम करने जाते और शाम जेल जाते, घर न पहुँचते। यदि सरकार जेलें भरना चाहती थीं, तो उसके लिए हज़ारों लोग उस समय तैयार थे।

दिसम्बर ७ को जवाहर ने अपना काम चुस्ती से पूरा कर लिया और जब वे शाम को आनन्द भवन पहुँचे तो वहाँ पोलीस उनके घर की तलाशी ले रही थी। जवाहरलाल नेहरू और मोतीलाल नेहरू को गिरफ्तार करने के लिए उनके पास वारन्ट थे। दोनों पर अलग अलग अभियोग थे।

दोनों की अलग अलग अदालतों में सुनवाई हुई। पर दोनों को एक ही सजा हुई—६ मास की सजा। मोतीलाल

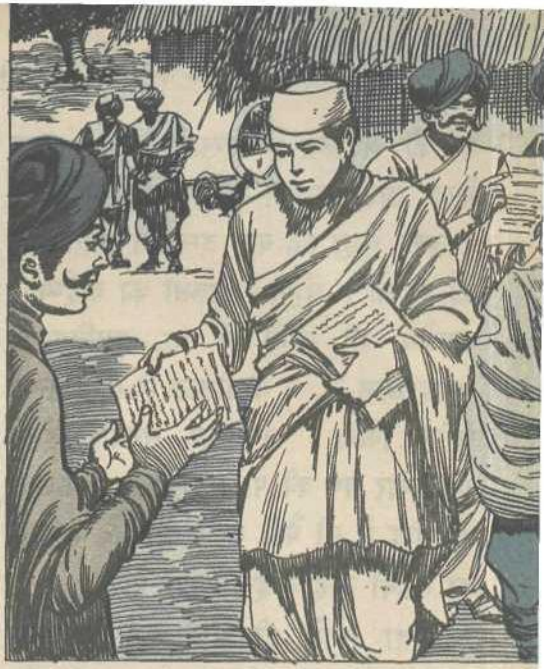

का अपराध था—गैर कानूनी संस्था का सदस्य होना। जवाहरलाल नेहरू का अपराध हड़ताल के लिए पर्चे बाँटना था। सच कहा जाय तो यह उन दिनों कानून के खिलाफ़ न था। यह बात अधिकारियों को बाद में मालूम हुई। तीन महीने की सज़ा के बाद जवाहरलाल नेहरू को छोड़ दिया गया।

सुनवाई में कई गड़बड़ियाँ हो रही थीं। मोतीलाल के अपराध को साबित करने के लिए उनके हस्ताक्षरवाला कान्ग्रेस के सदस्यता पत्र की आवश्यकता थी। एक

पत्र को अदालत में दिखाया गया। एक बेपढ़ छोटे आदमी ने उस पत्र को उलटा पकड़कर कहा कि वह दस्तखत मोतीलाल का ही था। चूँकि अदालतों का बहिष्कार कान्ग्रेस की नीति में था, इसलिए न जवाहरलाल ने, न मोतीलाल ने ही, इसका विरोध किया। जब तक सुनवाई होती रही, चार वर्ष की पोती इन्दिरा, मोतीलाल की गोद में ही बैठी रही। पहिले कचहरी का तजर्बा उन्होंने इस प्रकार पाया।

सज़ा सुनते ही मोतीलाल ने अपने साथियों को यह सन्देश भेजा। "मैं और मेरा इकलौता लड़का देश की सेवा के लिए जेल जा रहे हैं। सैकड़ों और हज़ारों की संख्या में स्वयंसेवकों को भरती करवाइये। जब तक स्वराज्य न मिले, तब तक अहिंसायुक्त आन्दोलन जारी रखिये। भारत में स्वतन्त्रता देवी का एक ही मन्दिर है और वह है जेल। वहाँ लोग तीर्थ यात्रा पर जायें।"

१९२१ दिसम्बर, १९२२ जनवरी मास में ३०,००० लोग यात्री जेल गये। ये गिरफ्तारियाँ अधिकतर बेन्गाल और यू. पी. में हुईं। कान्ग्रेस कार्यकर्ता और नेता तो जेल गये ही, यह भी आश्चर्य की बात थी कि कई ऐसे लोग जेल भेजे गये, जिनका कान्ग्रेस से कोई सम्बन्ध न था। जवान और लड़के पोलीस की लारियों में सवार हो गये और उन्होंने उतरने से इनकार कर दिया। बिना नाम के इतने आदमियों को वारन्ट दिये जाते, वारन्ट से अधिक आदमियों का लोरियों में जेल जाते और उस हालत में जेल के कर्मचारी अक्सर दुविधा में पड़ जाते कि क्या जाये।

[२]

मानसिंह की दृष्टि में जगतसिंह ने एक नहीं, दो नहीं, कई ऐसे काम किये थे, जो उसे नहीं करने चाहिए थे।

अनेक योद्धाओं के सामने जगतसिंह ने पिता के सामने खड़े होकर, प्रतिज्ञा की थी कि यदि पाँच हज़ार सैनिक दिये गये, तो पठानों को सुवर्ण रेखा नदी के पार खदेड़ देगा। इतनी जिम्मेवारी जिसने अपने सिर पर ली थी, वह, वह काम छोड़कर, आधी रात के समय, अपनी प्रेयसी को ढूँढ़ता, एक और के किले में चोर की तरह घुसा और वहाँ पठानों द्वारा पकड़ा गया, कैदी बना लिया गया। उस लड़के पर, जिसने अपने को अयोग्य, आज्ञा उल्लंघनकारी सिद्ध कर दिया था, मानसिंह बड़ा क्रुद्ध था। इस क्रोध के कारण ही उसने पठानों का नाश करके, अपने लड़के को छुड़ाने का प्रयत्न नहीं किया।

विमला के हाथ मारे जाने के पहिले, कतलूखान ने जगतसिंह को विमुक्त करके, मानसिंह के पास सन्धि के लिए भेजा था। लड़के द्वारा प्रस्तावित सन्धि के लिए, मानसिंह मान भी गया क्योंकि उसको जल्दी दिल्ली जाना था। वर्षा के बाद ही

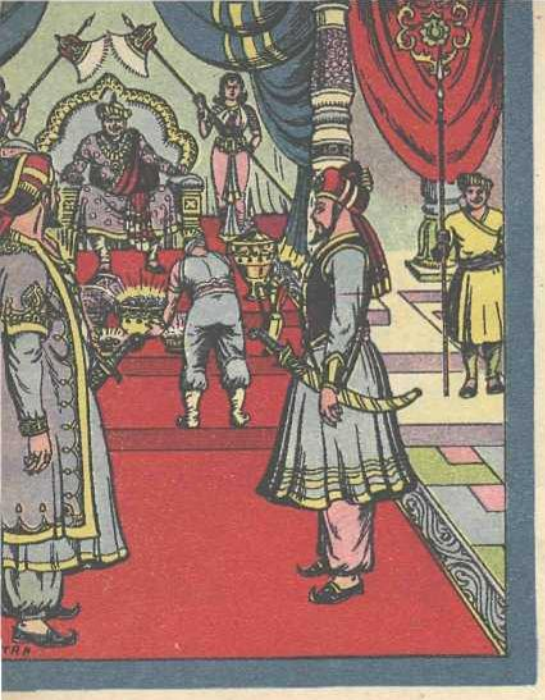

सैय्यदखान अपनी सेना लेकर, उससे मिल सकता था। बड़े पैमाने पर लड़ाई से अच्छा, सुलह कर लेना ही था। ज्योंहि मानसिंह सन्धि के लिए मान गया, त्योंहि नये नवाब सुलेमानखान ने अपने मन्त्री और सेनापति उस्मानखान के साथ आकर, मानसिंह को बहुत-से उपहार दिये। मानसिंह उनको पाकर सन्तुष्ट हो गया और उसने आगन्तुकों को उचित रूप से सत्कार करके भेज दिया। उसने जब अपनी मुगल सेना को पटना वापिस जाने के लिए कहा, तो उसके एक सेनापति, अपने लड़के को कोई काम न दिया। तभी मानसिंह ने अपने मन में तय कर लिया था कि उसकी सुनवाई करनी होगी।

इसके बाद जगतसिंह ने कई और अपराध करके, पिता की क्रोधाग्नि को और प्रज्वलित किया। वह पिता से बिना कहे ही छावनी छोड़कर, मन्धारण किले में गया। बिना पिता की अनुमति के उसने तिलोत्तमा से विवाह किया। विवाह में उसके बहुत-से बन्धु आये। नवाब की लड़की अयाशा, अपनी दासियों के साथ आयी। परन्तु पिता को विवाह के लिए जगतसिंह ने न बुलवाया, न उसका आशीर्वाद ही प्राप्त किया।

मानसिंह की दृष्टि में जगतसिंह ने दो गलतियाँ की थीं। बिना पिता को सूचित किये, विवाह करना एक गलती थी। वीरेन्द्रसिंह की लड़की के साथ विवाह करना दूसरी गलती थी। उसकी दृष्टि में वीरेन्द्रसिंह और उसका लड़की कुलहीन थे।

जगतसिंह के अपराध, तिलोत्तमा से विवाह करने से नहीं समाप्त हो गये थे। जब मुगल सेना पटना जा रही थी, तो उसने एक सेनापति के नाते अपना कर्तव्य

नहीं निभाया था। वह वहाँ गया तक नहीं। यही नहीं, वह अपनी पत्नी के साथ इस तरह गुलछर्रे उड़ा रहा था कि उसने एक मास तक अपनी सेना का, जो दारुकेश्वर के पास पड़ाव डाले हुए थी, परवाह तक न की।

लड़के की हरकतें याद करके, मानसिंह का क्रोध और भी बढ़ गया। उसने निश्चय कर लिया था कि उसको सज़ा मिलनी चाहिए थी, इसलिए सबके सुनते, उसने सैनिकों को आज्ञा दी—"जगतसिंह को नहीं, तो उसके शव को पकड़कर लाओ।" उन्होंने शैलेश्वर के पास आकर उसे पकड़ लिया। जिस शैलेश्वर के पास जगतसिंह की प्रेम कथा प्रारम्भ हुई थी, ऐसा लगता था, जैसा उसका अन्त भी वहीं हो रहा हो।

पटना में अपने लड़के की सुनवायी के लिए, मानसिंह ने खुले आम दरबार किया। सुनवायी के लिए हज़ारों आदमी जमा थे। मानसिंह ऊँचे आसन पर बैठा था। उसके दोनों ओर मुख्य राज-कर्मचारी आसनों पर बैठे थे। सभा खचा खच भरी हुई थी और शान्ति थी। सब चिन्तित से थे।

"कैदी को लाओ।" मानसिंह ने आज्ञा दी।

अधेड़ सैनिकों के बीच सिर नीचे किये, जगतसिंह चलता-चलता, पिता के सामने आया और वहाँ रुक गया। मानसिंह ने उसको "कैदी" कहकर सम्बोधित किया। उसने कहा कि वह पहिले उसके पारिवारिक अपराधों का विचार करेगा और फिर उसके बाद राजनैतिक अपराधों का।

एक वृद्ध मुगल ने, जो सभा में बैठा था, उठकर कहा—"महाराज, मेरी प्रार्थना है कि इस लड़के के अपराध क्षमा कर

दिये जायें। पारिवारिक विषयों पर सब के सामने सुनवायी न हो।"

"नहीं, नहीं, पारिवारिक अपराध और राजनैतिक अपराध, जो कैदी ने किये हैं, उन दोनों में सम्बन्ध है। किसी के जाने की ज़रूरत नहीं है।" मानसिंह ने कहा। वृद्ध मुगल बैठ गया। मानसिंह ने सुनवायी प्रारम्भ करते हुए कहा—"मैं जो प्रश्न करूँ, उनका यदि तुमने ठीक ठीक उत्तर न दिया, तो तुम्हारा अपराध और बड़ा माना जायेगा।"

तब जगतसिंह ने गर्वपूर्वक कहा—"महाराज, यह कहने की ज़रूरत नहीं है। जगतसिंह अपने प्राणों की रक्षा के लिए भी झूट नहीं बोलेगा।"

"क्या यह सच है कि तुम वीरेन्द्रसिंह के अन्तःपुर के एक कमरे में, एक स्त्री के साथ, पठानों द्वारा कैदी बना लिये गये थे?"

"सच है।"

"जब तुम, पठानों की कैद में थे, तब कतलूखान की लड़की अयाशा के मन में, तुम्हारे पति प्रेम उमड़ आया था। यह सच है?"

"इस प्रश्न का उत्तर ज़रा लम्बा है। नवाबनन्दिनी अयाशा ने मेरा कल्याण किया

है। जब मेरी हालत अब तब की थी, यदि वह माँ की तरह, बहिन की तरह, पत्नी की तरह सेवा न करती, तो आज शायद मैं यहाँ खड़ा न होता। मैं उसको एक अप्सरा-सी निष्कपट श्रेयोभिलाषिणी समझता हूँ। उसके प्रति मन में कोई और भाव नहीं है। परन्तु दुर्भाग्यवश मुझे एक घटना के सम्बन्ध में मालूम हुआ कि वह मुझ से प्रेम करती थी। यह जानने पर मुझे बड़ा दुःख हुआ कि मैं उसके प्रेम को स्वीकार नहीं कर पाया था।"

"क्या उसके कारण तुम्हारा, उस्मान खान से द्वन्द्व युद्ध हुआ था?"

"उस्मानखान ने अयाशा को प्रेम किया था। उसके प्रेम करनेवाले दो नहीं होने चाहिए थे, इसलिए उसने कहा कि उसको मुझसे युद्ध करना होगा। मैंने युद्ध नहीं किया था।"

"क्या तुमने कभी कभी नवाब की लड़की के पास पत्र नहीं भेजे थे?"

"एक बार भेजा था।"

"क्या कभी तुम स्वयं उसको देखने गये थे?"

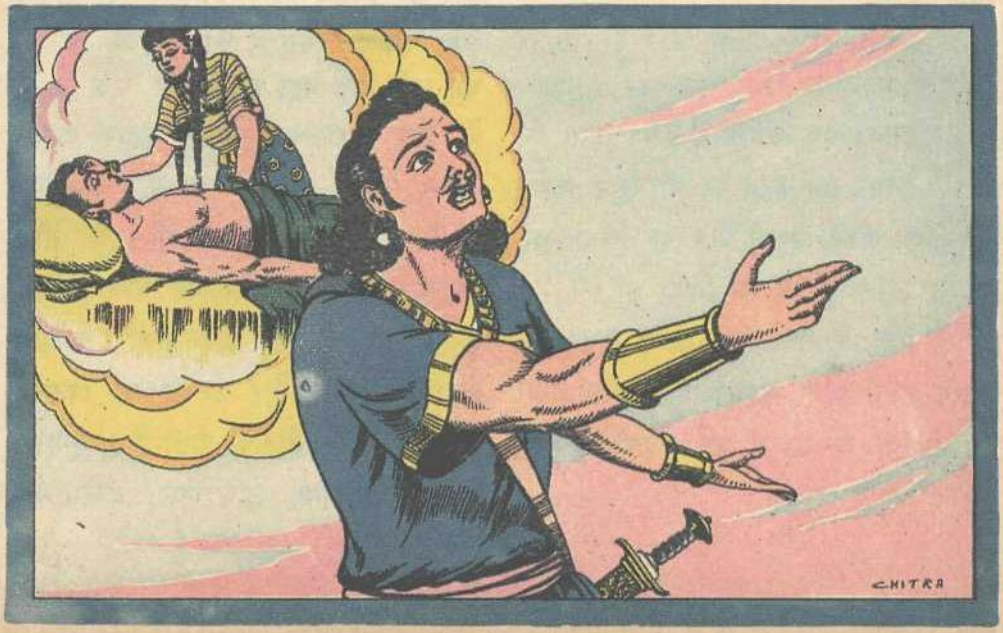

"गया था। जाते समय मैं उसको एक बार देखकर उससे विदा लेना चाहता था।"

"उसने, तुम्हें बिना देखे ही तुमको भेज दिया था न?"

"इसका एक कारण है।"

"इतना सब होने पर भी, तुम कहते हो कि तुमने उससे प्रेम न किया था, परन्तु उसने तुम से प्रेम किया था।"

"मैंने असलियत बता दी है। विश्वास करना या न करना, महाराजा की इच्छा है।"

"क्या वीरेन्द्रसिंह की लड़की तुम्हारी रखैल है?"

जगतसिंह इस बात पर बिगड़ उठा। उसके शरीर में बिजलियाँ चलने लगीं।

"महाराज! आप शासक के तौर पर, राजा के तौर पर, विशेषतः पिता के तौर पर आदरणीय हैं, यदि ये बातें और किसी ने कही होतीं, तो मैं उसके टुकड़े-टुकड़े कर देता। वीरेन्द्रसिंह की लड़की मेरी पत्नी है। अग्नि के समक्ष बियाही हुई सहधर्मिणी है।"

मानसिंह आग बबूला हो गया। वह चिल्लाया—"राजपूत वंश को कलंक लगाने वाले अधम! तुमने ये जो बातें कही है, उसके लिए यदि तुम्हारी जीभ भी खिंचवा दी गई, तो कोई बुरा नहीं है। शर्म के कारण, तुम्हारे प्राण निकल नहीं गये? अब भी हैं? वीरेन्द्र की लड़की तुम्हारी धर्म पत्नी है? वह वीरेन्द्रसिंह एक दासी के लिए मेरे अन्तःपुर में कहार बनकर आया, पकड़ा गया। एक नीच कुल की स्त्री विमला से उसने शादी की। वह नीच तुम्हारा ससुर है? और वह नीच विमला, तुम्हारी सौतेली सास है? तुम्हारी धर्मपत्नी किसकी लड़की है? उसकी माँ किसकी लड़की है? वह किसकी पोती है? तुम्हारी पत्नी का मातामह शशिशेखर, दुनियाँ-भर

के गलत काम करके, अब सन्यासी बनकर, परमज्ञानी का ढ़ोंग रचकर घूम रहा है— अभिरामस्वामी। ये सब नीच, अब तुम्हारे बन्धु-सम्बन्धी हैं। तुम्हारी बुद्धि क्या हुई? यदि तुम वीरेन्द्रसिंह की लड़की को अपनी रखैल बताते, तो शायद वह उतना बड़ा दोष न होता। मुझे शत्रु समझकर, बिना मेरी अनुमति के या आशीर्वाद के, तुमने शादी की, तुम मेरे लड़के ही नहीं हो। यदि तुमने कहीं कहा कि तुम मानसिंह के लड़के हो, तो तुम्हें मौत की सज़ा अवश्य मिलेगी।"

सभा में बैठे लोगों को मानों काठ मार गया। वे पथराये से मानसिंह को सुन रहे थे। उसने जगतसिंह के राजनैतिक अपराधों की सुनवायी शुरु कर दी।

"तुम्हारे राजनैतिक अपराधों के बारे में कुछ प्रश्न करता हूँ। तुम बादशाह के सैनिक होकर, एक ऐसे सेनापति होकर, जिसको विशेष कार्य सौंपा गया था, क्यों तुम दुर्गाधिपति की आज्ञा के बिना, रात के समय चोर की तरह किले में गये?"

जगतसिंह ने सिर नीचे कर लिया। उसने कोई जवाब न दिया।

"अपनी पाँच हज़ार सेना और पठानों को भगाने का काम छोड़कर, एक स्त्री के लिए क्या तुम वहाँ नहीं गये थे?"

जगतसिंह कुछ न बोला।

"पठानों ने जब तुम्हें छोड़ दिया था, तब क्यों नहीं तुमने वहाँ मेरी आज्ञा की प्रतीक्षा की?"

कोई जवाब न था।

"जब सेनाधिपति अपनी अपनी सेना लेकर जा रहे थे। तब तुम क्यों नहीं उनके साथ गये?"

जवाब नहीं।

"बिना किसी की आज्ञा, बिना बादशाह का कोई काम किये क्यों तुमने मनमानी अपना समय व्यर्थ किया? क्यों नहीं बात करते? दुष्ट कहीं का, तुम जैसे को, सिवाय मौत के और क्या सज़ा दी जा सकती है?"

वृद्ध मुगल ने फिर उठकर कहा—"हुज़ूर, माफ़ कीजिए। एक बात है, युवराज आपका लड़का है...." उसने कहना शुरु किया।

"इस नीच को मेरा लड़का बतानेवाला कौन है? मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि मेरा सम्बन्ध इससे पिता पुत्र का नहीं है।" मानसिंह ने ज़ोर से कहा।

"ठीक है। क्या आप धर्म नहीं जानते? युवराज अभी बच्चा है।" कहता मुगल वृद्ध बैठ गया।

मानसिंह ने कुछ समय तक सिर नीचे करके सोचा। फिर उसने कहा—"अपराधी। तुम्हारे लिए उचित दण्ड, मृत्यु दण्ड ही है। फिर भी, उम्र का ख्याल करते हुए, तुम्हें आजीवन कारावास का दण्ड देता हूँ।" उसने सैनिकों से कहा—"इसके आभूषण, पोषाक निकाल लो। इसे कैदी के वस्त्र पहिनाओ और मेरे सामने इसके हाथ और पैरों पर जंजीरें बाँध दो। सबके सामने इसको कैद ले जाओ।"

सैनिक, जब जगतसिंह की पोषाक बदलकर, जंजीरे बाँधकर ले जा रहे थे, तो सभा में तहलका मच गया। सेनापतियों ने सिर झुका लिये। वृद्धों की आँखें छलक आयीं। जगतसिंह के ओझल होते ही सभा विसर्जित हो गयी। [अभी है]

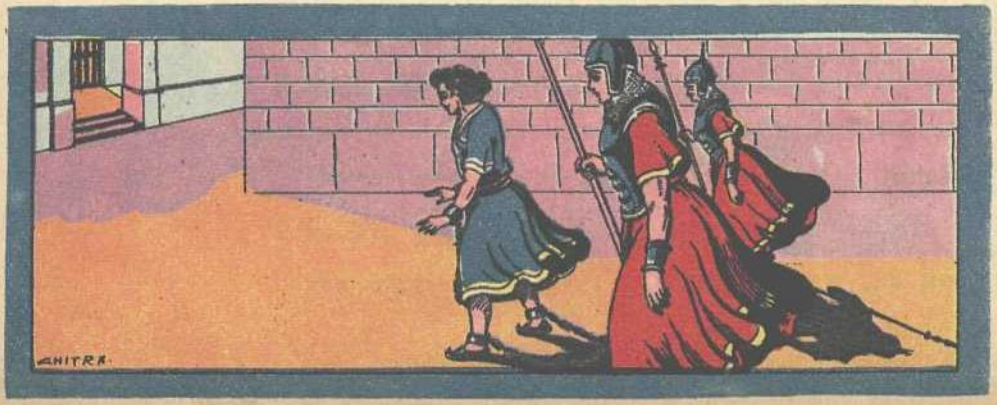

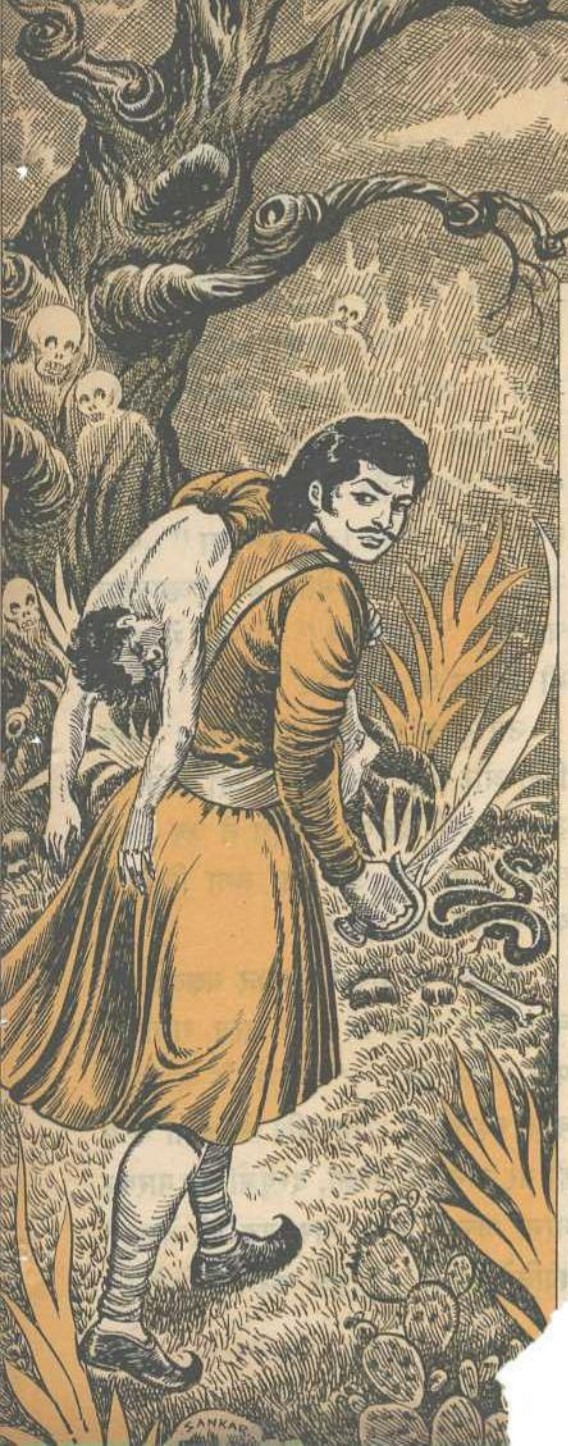

हरजाना

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतारकर हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, तुन्हें देखकर, मुझे वे सालंकि याद आ रहे हैं, जिन्होंने यक्षदत्त को हरजाना देने के लिए नाना कष्ट उठाये थे। उनकी कथा सुनो, थकान नहीं मालूम होगी।" उसने फिर यूँ कहानी सुनानी शुरु की।

ब्रह्मदेश के पश्चिमी तट पर तारा द्वीप में, एक दुर्बल राजा राज्य किया करता था। प्रति वर्ष, दक्षिण के द्वीपों से दस्यु राजा के सैनिक आया करते, और प्रति ओखल, मूसल, कोल्हू, चक्की, चूल्हे पर अलग अलग कर लगाते, और उन्हें वसूल करके चले जाते। यदि कर न

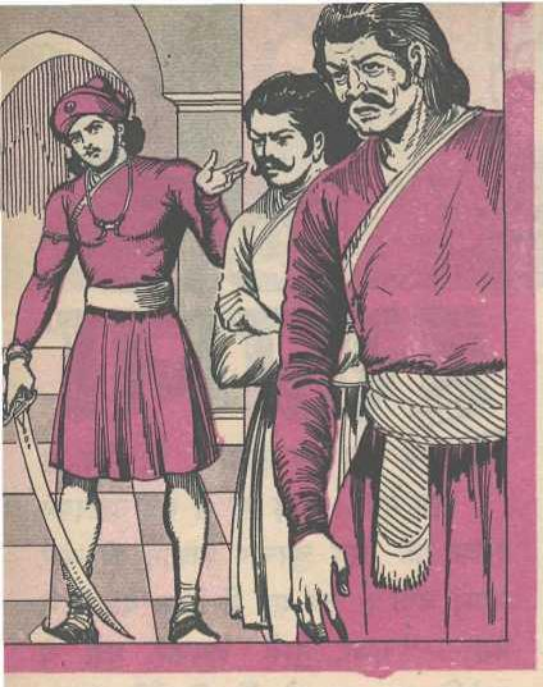

दिये जाते, तो राजा को भय था कि दस्यु आकर तारा द्वीप को लूट लेंगे। इसलिए वह सब कर चुका दिया करता। इन करों के कारण, तारा द्वीप की प्रजा हर साल गरीबी के कारण कराह उठती।

दस्यु बड़े क्रूर और असभ्य थे। उनसे युद्ध करते साधारण लोग डरते थे। सब से अधिक डरपोक राजा था। ऐसी बात न थी कि लोगों में आसाधारण शूर और पराक्रमी न थे। परन्तु उनको संगठित करने के लिए कोई नेता न था। इसलिए उनके पराक्रम का कोई उपयोग न था।

ऐसी हालत में, एक युवक तारा द्वीप आया। वह होने को तो तारा द्वीप का था, परन्तु छुटपन में ही, यक्ष उसको अपने प्रान्त में ले गये। उसको पाल पोसकर बड़ा किया। फिर उसको अपने देश भेज दिया। उसने कुछ यक्ष विद्यायें सीखीं। आते आते वह अपने साथ "जलतारा" नामक नौका और "अप्रतिहार" नामक तलवार ले आया। "जलतारा" पानी और ज़मीन पर, नेता की इच्छानुसार चलती। "अप्रतिहार" की चोट से पत्थर भी मक्खन की तरह कट जाते।

उस युवक का नाम यक्षदत्त था। उसके पिता और भाई, ताराद्वीप में रहा करते थे। उनको दुःखी देखकर यक्षदत्त ने जब उनसे कारण पूछा, तो उसे पता लगा कि दस्यु कर बटोरने आ रहे थे।

दस्युओं के बारे में सुनकर यक्षदत्त को बड़ा गुस्सा आया। उसने तुरत राजा के पास जाकर कहा—"दस्युओं के अत्याचार बहुत बढ़ रहे हैं। ताराद्वीप के लोगों के यूँ ही मर जाने की अपेक्षा, दस्युओं को मारकर मरना अच्छा है। आप युद्ध की तैय्यारी कीजिये, नहीं तो मुझे करने दीजिये।"

बहुत आगा पीछा करने के बाद, राजा ने यक्षदत्त को युद्ध करने को तैय्यारी करने की अनुमति दी, ताराद्वीप के योद्धाओं को बुलाने के लिए उसने अपने पिता और भाई को एक एक दिशा में भेजा। परन्तु उसके पिता को सालंकी वंश के तीन भाइयों ने पकड़कर मार दिया। इसका कारण दोनों वंशो का परस्पर द्वेष ही था।

यक्षदत्त को अपने पिता की मृत्यु के बारे में नहीं मालूम था। वह युद्ध की तैय्यारी में लगा हुआ था। कुछ दिनों बाद, कर वसूलने के लिए दस्यु सैनिक आये। यक्षदत्त ने उनको खूब पीट पाटकर भेज दिया। दस्यु राजा क्रुद्ध हो उठा। उसने ताराद्वीप पर आक्रमण करने के लिए सेना भेजी। यक्षदत्त ने दस्युओं की नौकाओं को समुद्र में डुबा दिया। अपने सैनिकों से दस्यु सैनिकों का मुकाबला करवाया। उसने अपनी अजेय तलवार से सैकड़ों दस्युओं को मारा। इस तरह उसको बड़ी विजय प्राप्त हुई। सालंकियों ने भी बड़ा पराक्रम दिखाया।

युद्ध के समाप्त होते ही, यक्षदत्त ने जब अपने पिता के लिए खोजा, तो उसको असलियत मालूम हो गई। उसका खून खौलने लगा। वह जब अपने पिता का दहन संस्कार करके, राजधानी गया, तो वहाँ राजा बड़े पैमाने पर विजयोत्सव मना रहा था।

यक्षदत्त भरी सभा में गया। सभा में खड़े होकर, उसने अपने दोनों हाथ उठाये। "हमारे वीर, परम वीर कुछ कहने जा रहे हैं। सुनो।" राजा ने कहा।

"महाराज! यदि कोई आपके पिता की हत्या करे, तो आप उसको क्या सज़ा देंगे?" यक्षदत्त ने पूछा।

"सिर कटवा दूँगा।"

"मेरे पिता की हत्या करनेवाले इस सभा में हैं। उनको उचित दण्ड दिया जाये, इसके लिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ।" यक्षदत्त ने कहा।

"बताओ, वे कौन हैं। मैं उनकी सुनवायी करके, उनके सिर कटवा दूँगा।" राजा ने कहा।

"मैं उनके सिर नहीं चाहता, यह काफ़ी है यदि वे मेरी पिता की मृत्यु के लिए आवश्यक हरजाना दे दें।" यक्षदत्त ने कहा।

तुरत तीनों सालंकियों ने खड़े होकर कहा—"तुम क्या हरजाना चाहते हो?"

"तीन बेल, एक चमड़े का थैला, एक भाला, एक कुत्ते का पिल्ला, एक तवा।" यक्षदत्त ने कहा।

"इसमें ज़रूर कोई राज है। अगर अपनी पिता की हत्या के लिए इतना कम माँग रहे हो, तो कौन विश्वास करेगा?" सालंकियों के बड़े भाई ने कहा।

"अब सविवरण बताता हूँ। सुनो। जो बेल मैं माँग रहा हूँ, वे पूर्वीद्वीप के एक बाग में हैं। वे सोने के रंग के हैं। वे मनुष्य के सिर के बराबर हैं। उनका स्वाद शहद की तरह है। उनको खाने से सब घाव भर जाते हैं। रोग दूर हो जाते हैं और चमड़े की जो थैली चाहता हूँ, वह यवनद्वीप के राजा के पास है। बड़े बड़े घाव और रोग भी उसको छुआते ही भर जाते हैं और भाला, मुगलद्वीप के राजा के पास है। जो कोई उसका सिर छूता है, वह भस्म हो जाता है। वह चूँकि अंगारे उगलती रहती है इसलिए उसको पानी के गमले में रखा जाता है। कुत्ते का पिल्ला राक्षस द्वीप में है। उसको देखते

ही शेर जैसे क्रूर मृग भी भाग जाते हैं और तवा वारुण द्वीप में है। वह द्वीप कहां हैं, यह जानना ही असम्भव है। वह होने को तो द्वीप है, पर समुद्र में कहीं उसका पता नहीं लगता। यदि तुमने मेरा हरजाना दे दिया तो मैं नहीं चाहूँगा कि तुम्हें कोई और दण्ड दिया जाय।" यक्षदत्त ने कहा।

सालंकी भाइयों ने आपस में सलाह मशवरा करके कहा—"यदि तुमने अपना "जलतारा" दिया, तो सब जगह जाकर, जो तुम चाह रहे हो, वह सब ले आयेंगे।" यक्षदत्त इसके लिए मान गया।

सालंकी "जलतारा" पर सवार होकर निकल पड़े। वे जानते थे कि जो कुछ यक्षदत्त ने माँगा था, उनको पाने की कोशिश करना, मौत से खेलना था। चूँकि वे बहुत साहसी और धैर्यशाली थे। वे अपने प्रयत्न में मरने तक को तैयार हो गये।

पहिले वे पूर्वी द्वीप गये। वहाँ उन्होंने सोने के बेलों के पेड़ को दूर से देखा। उस पेड़ के नीचे तीन तीरन्दाज पहरा दे रहे थे। सालंकियों ने उस दिशा की ओर तीन बाज़ छोड़े। पेड़ के नीचे खड़े

पहरेदारों ने उन्हें देखकर, बाण चढ़ाये ही थे कि वे थोड़ी दूरी पर मँड़राने लगे। पहरेदार उनको मारने के लिए पेड़ के नीचे से चले गये। उसी समय सालंकियों में से एक पेड़ पर चढ़ गया और सोने का बेल तोड़ लाया। इस बीच पहरेदार भी जान गये कि उनकी आँखों में धूल झोंकी गयी थी। उन्होंने उन पर बाण छोड़े, पर तब तक वे उनसे बचकर, "जलतारा" में पहुँच गये थे।

फिर सालंकि अपनी नाव में यवनद्वीप पहुँचे। वहाँ के राजा के पास वे भाट

का वेष धारण करके गये। उसकी स्तुति में, उन्होंने कवितायें सुनायीं। राजा ने सन्तुष्ट होकर पूछा—"क्या ईनाम चाहते हो?" सालंकियों ने उससे चमड़े की थैली माँगी।

यवन राजा ने कहा—"यदि उसे भगवान ने भी माँगा, तो भी न दूँगा। चाहो तो उसमें, जितना सोना आता है, उतना ले लो। राजा का सैनिक जब उसमें सोना-भर रहा था, तब सालंकियों में बड़े भाई ने उसे ले लिया। दूसरे ने सैनिक को तलवार से मार दिया। जिस जिसने उनको रास्ते में रोका, उस उसको वे मारते गये और अन्त में नाव में पहुँच कर यात्रा पर निकल पड़े।

वहाँ से वे मुगल द्वीप पहुँचे। पंड़ितों का भेस बनाकर, उन्होंने राजा के दर्शन किये। उन्होंने राजा से कहा कि वे ताराद्वीप के राजकवि थे और पर्यटन के लिए निकले थे। राजा ने सन्तुष्ट होकर, उनका आदर सत्कार किया। उसने और आश्चर्यजनक चीज़ों के साथ, अंगारे उगलनेवाले भाले को भी दिखाया। जब सालंकियों में से एक ने गमले में से उसको उठाया, तो उसमें से आग निकलने लगी। राजा चिल्लाया—"उसे न छूओ!" बड़ा होहल्ला हुआ। उस शोर में सालंकियों ने भागना चाहा। परन्तु राजा उनकी चाल समझ गया। वह अपने सैनिकों को बुलाता, तलवार लेकर उन पर लपका। सालंकियों ने राजा को मार दिया। सैनिकों से बहुत देर तक युद्ध किया। सबको मारकर, स्वयं घायल होकर जैसे तैसे, नौका में वे पहुँच गये।

अब राक्षस द्वीप जाकर, कुत्ते के पिल्ले को लाना था। वे जानते थे, ज्यों ज्यों वे आगे बढ़ते जाते थे त्यों त्यों मृत्यु

का भय अधिक हो रहा था। फिर भी उन्होंने यक्षदत्त के माँगे हरजाने को देने का निश्चय किया। परन्तु कुत्ते का पिल्ला पकड़ना उनके लिए बड़ा आसान रहा। राक्षस राजा ने उनको देखते ही पूछा—"तुम सालंकी हो न? तुम मुझसे क्या चाहते हो?"

उन्होंने चकित होकर कहा—"सुनते हैं, यहाँ शेर आदि को भी डरा देनेवाला कुत्ते का पिल्ला है। वह हमें चाहिए।"

"ले जाओ। हम तुम्हारे साहसिक कृत्यों के बारे में जानते हैं। अगर मैं कह भी दूँ कि तुम्हें यह पिल्ला नहीं दूँगा, तो क्या तुम बिना लिए रहोगे? इसलिए स्नेहपूर्वक ही इसे ले जाओ।" राक्षस राजा ने कहा।

सालंकियों ने उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। "यदि कभी युद्ध में आपको हमारी सहायता की आवश्यकता हो, तो कौव्वे से खबर भिजवाइये हम आ जायेंगे।" राक्षस राजा से विदा लेकर, वे चले गये।

अब उनको वारुण द्वीप से एक तवा लाना था। पर वे यह न जान सके कि वह वारुण द्वीप कहाँ था। राक्षस राजा ने

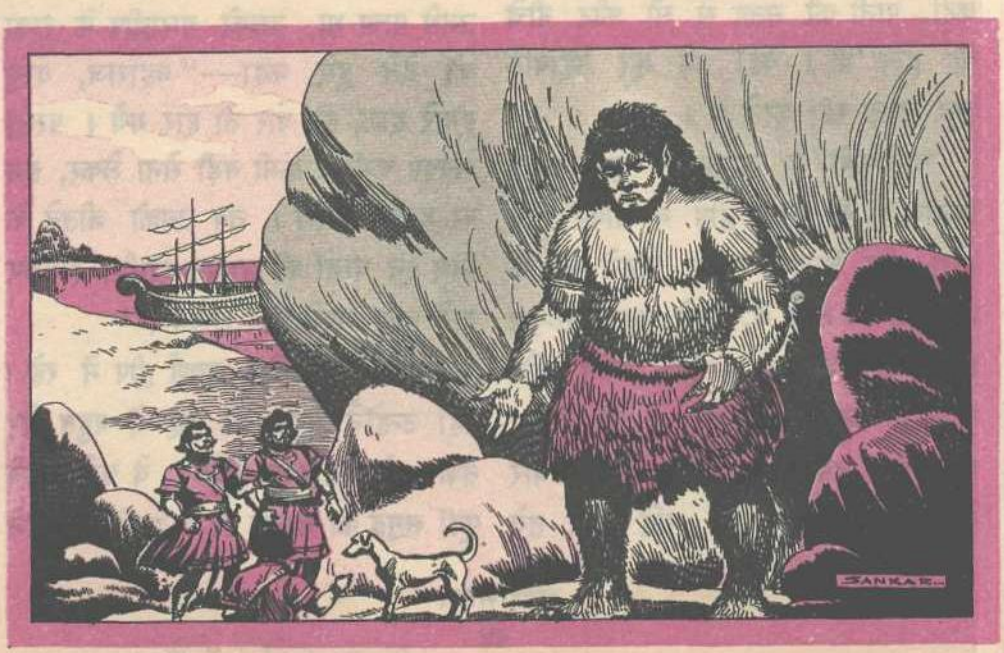

इतना अवश्य बताया था कि पूर्वी समुद्र में कहीं, पानी की सतह से सौ फीट नीचे वह द्वीप था। वहाँ बड़े क्रूर महाबलि जल राक्षस रहा करते थे।

सालंकियों ने आपस में कुछ सोचा विचारा। वे वारुण द्वीप न जाकर सीधे तारा द्वीप जाकर देखना चाहते थे कि जो कुछ वे लाये थे, उनसे यक्षदत्त सन्तुष्ट होता था कि नहीं—चूँकि उसने और चीज़ों की महत्ता के बारे में तो बताया था, पर तवे की महिमा के बारे में कुछ न बताया था। यदि उसने तवे के बारे में ज़िद की तो तभी उसे लाने निकल पड़ेंगे।

यह सोचकर सालंकि तारा द्वीप वापिस आये। उन्होंने यक्षदत्त को बेल, चमड़े की थैली, अंगारे उगलनेवाला भाला, कुत्ते का पिल्ला देकर पूछा—"तुम्हारा हरजाना मिल गया है न?"

"अभी वारुण द्वीप से तुम्हें तवा लाना है।" यक्षदत्त ने कहा।

सालंकी फिर एक बार "जलतारा" माँगकर, उस पर सवार होकर, पूर्वी समुद्र की ओर निकल पड़े।

यक्षदत्त ने जो कुछ हरजाने के रूप में उनसे पाया था, उसको ताराद्वीप के राजा को देते हुए कहा—"महाराज, दस्यु हमारे हाथ, इस बार तो हार गये। परन्तु अवश्य कभी न कभी बड़ी सेना लेकर, हम पर हमला करेंगे। तब उनको जीतने के लिए इन चीज़ों की ज़रूरत होगी। इसलिए इन्हें आप अपने पास रखिये।"

सालंकी कुछ दिन सुवर्ण द्वीप में रहे। वहाँ उन्होंने समुद्र की तह में बहुत देर तक रहने की विद्या सीखी। वे कई महीने पूर्वी समुद्र को छानते रहे। आखिर उन्होंने

वारुण द्वीप का पता लगा लिया। वारुण द्वीप तो सौ फीट नीचे ही था, पर उसके आसपास का समुद्र कई हज़ार फीट गहरा था, उस द्वीप पर भयंकर जल राक्षस थे।

सालंकी रात के समय, उस द्वीप में उतरे। एक जल राक्षस के घर गये। जैसे भी हो, उन्होंने एक तवा ले लिया। जब वे उसे लेकर जा रहे थे, तो दो जल राक्षसों ने उनका पीछा करके, उनको पकड़ लिया। वे अपने नाखूनों से उनका माँस नोंचने लगे। जब दो सालंकी, उनके वश में विवश थे, तो तीसरे ने तलवार से लड़कर, दोनों राक्षसों को मार दिया। अपने दोनों भाइयों को दो बगलों में रखकर, जल के ऊपर के "जलतारा" में पहुँच गया।

तीनों बुरी तरह घायल हो गये। बड़े की अपेक्षा, दोनों इतने घायल हो गये थे कि बेहोश हो गये थे। मालिक की इच्छा पर चूँकि "जलतारा" स्वयं चल सकती थी, इसलिए वह अत्यन्त वेग से तारा द्वीप पहुँची। तट पर भी न रुकी, सीधे राजमहल पहुँची।

सालंकियों के बड़े भाई ने तवे को यक्षदत्त को देते हुए कहा--"तुम्हारा ऋण चुका दिया है, अब हम प्राण छोड़ रहे हैं।" और वह नीचे गिर गया और बाकी दोनों तो पहिले ही अब तब की हालत में थे।

यक्षदत्त ने तुरत चमड़े की थैली मँगवायी और उससे उनके घाव पोंछ दिये। थोड़ी देर में उनको होश आ गया और वे चकित हो उठे।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा--"राजा, मुझे एक सन्देह है। यक्षदत्त ने यही तो चाहा था कि जिन सालंकियों ने उसके पिता की हत्या की थी, उनकी मौत हो?

यह बात जल राक्षसों से तवा लाने के लिए कहने में और भी स्पष्ट होती है। उस हालत में, उसने उनको क्यों जीने दिया? यदि इन सन्देहों का तुमने जान बूझकर जवाब न दिया, तो तुम्हारे सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"यह कहीं निरूपित नहीं होता कि यक्षदत्त ने सालंकियों की मृत्यु चाही थी। यदि वह चाहता तो तभी तारा द्वीप का राजा, उनका सिर कटवा देता, क्योंकि यक्षदत्त ने तारा द्वीप की बहुत बड़ी सेवा की थी। उसने उस प्रकार का हरजाना भी इसलिए माँगा था, ताकि तारा द्वीप को दस्युओं का भय जाता रहे। सालंकियों को जल राक्षसों के पास भेजने में कुछ दुरुद्देश्य ज़रूर दिखाई देता है, पर उसमें भी उसने अपने द्वीप का कल्याण देखा। जब दस्युओं को यह मालूम होगा कि तारा द्वीप में ऐसे वीर थे, जो जलराक्षसों से लड़कर जीवित थे, तो वे तारा द्वीप पर आक्रमण करने में और भी डरेंगे। सालंकियों के अतुलनीय पराक्रम की पहिले ही प्रसिद्धि थी। इसलिए राक्षस द्वीप के वासियों ने उनसे लड़ाई नहीं की थी। जब तारा द्वीप के युवकों को मालूम होगा कि उनके बीच सालंकि भाइयों की तरह बहादुर लोग थे, तो वे भी और बहादुर होने की कोशिश करेंगे। इसलिए कहना होगा कि शुरु से अन्त तक यक्षदत्त ने तारा द्वीप का कल्याण ही सोचा था।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और फिर जाकर पेड़ पर बैठ गया।

ब्रह्मा की गाँठ

कभी काशी नगर में राजपाल नाम का युवक रहा करता था। बचपन में ही उसके माँ बाप गुज़र गये थे। वह उच्च कर्मचारियों की सहायता से अच्छी तरह पढ़ लिख गया। दरबार में उसने एक नौकरी भी पा ली। नौकरी के बाद, राजपाल ने शादी करने की ठानी। यदि माँ बाप होते तो पहिले ही विवाह हो चुका होता, पत्नी आ गई होती, गृहस्थी चल रही होती। पत्नी के न होने के कारण उसे अपना जीवन अधूरा अधूरा-सा लग रहा था। उसे मालूम हो गया कि बिना औरों की मदद के वह शादी न कर सकेगा। इसलिए उसने अपने एक मित्र से अपनी मन की बात कही।

"अमुक न्यायाधिकारी के एक सयानी लड़की है। सब तरह से वह तुम्हारे लायक लड़की है। आज रात ही तुम्हारे बारे में उनसे बात करूँगा और हर तरह से उनको मनाने की कोशिश करूँगा। कल अरुणोदय के समय, हम मणिकर्णिका घाट के यहाँ, सीढ़ियों पर मिलेंगे। तुम वहाँ आना। तब तुम्हें बताऊँगा कि मेरे प्रयत्न का क्या हुआ।" मित्र ने कहा।

उस दिन रात को राजपाल सो न सका। सवेरा होने से पहिले ही उसने बाहर देखा, यह सोचकर कि सवेरा हो गया था, वह जल्दी जल्दी मणिकर्णिका घाट की ओर गया।

जिसे वह उषाकाल समझे हुए था, वह वस्तुतः चान्दनी थी। मणिकर्णिका घाट पर कोई न था, राजपाल यह सोच ही रहा था कि शायद उसे अपने मित्र के

अनन्त शर्मा

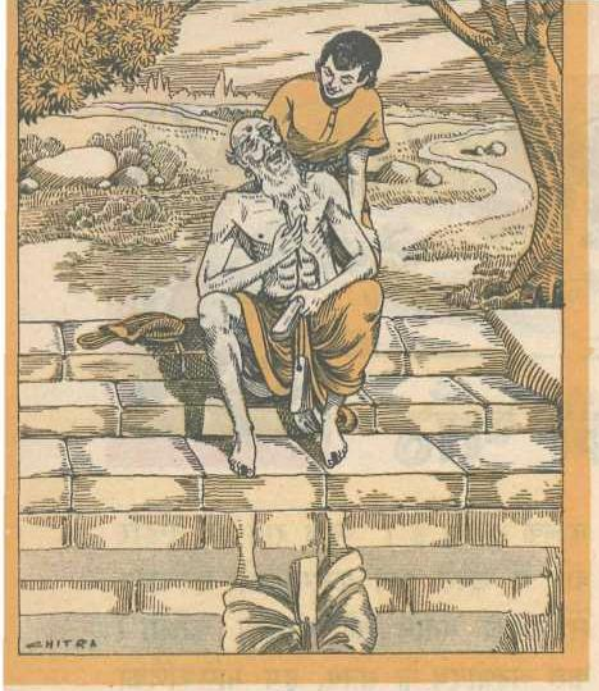

लिए ज्यादह समय प्रतीक्षा करनी पड़े कि उसे सीढ़ियों पर कोई बैठा दिखाई दिया। यह सोचकर कि उसके साथ बातें करके समय बिताया जा सकता था, वह उसके पास गया।

सीढ़ियों पर बैठा आदमी बूढ़ा था। चान्दनी में वह पत्रों पर कुछ लिख रहा था। राजपाल ने उसे बूढ़े के पीछे से देखा। परन्तु बूढ़ा जिस लिपि में लिख रहा था, वह बड़ी विचित्र थी।

"बाबा जी! मैं बहुत-सी लिपियाँ जानता हूँ। पर आप किस लिपि में लिख रहे हैं, यह नहीं मालूम हो रहा है।" उसने वृद्ध से कहा।

वृद्ध ने सिर उठाकर कहा—"यह तुम कैसे समझ सकोगे? यह ब्रह्म लिपि है।" यह कहकर वह अपने लिखने में मस्त हो गया।

"आप क्या लिख रहे हैं?" राजपाल ने पूछा।

"जो सूर्योदय से पहिले पैदा होंगे उनकी जन्मपत्रियाँ।" वृद्ध ने बिना सिर उठाये ही कहा।

राजपाल को सन्देह हुआ कि कहीं वह वृद्ध ब्रह्मा तो नहीं था। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

थोड़ी देर में वृद्ध ने लिखना बन्द कर दिया। बगल में से एक थैली निकाली। उसमें से लाल रत्तियाँ और सफ़ेद रत्तियाँ लेकर गाँठ बाँधने लगा।

"बाबा जी, आप ये गाँठें क्या बाँध रहे हैं?" राजपाल ने पूछा।

"ब्रह्मा की गाँठ, जिस पुरुष के भाग्य में जो स्त्री लिखी है, उनकी गाँठ बाँध रहा हूँ।" वृद्ध ने बिना सिर उठाये अपना काम करते हुए कहा।

"फिर तो आप जानते ही होंगे कि मेरी गाँठ किससे बँधी है? मैं इस प्रतीक्षा में हूँ कि थोड़ी देर में मेरे विवाह के निश्चित होने के बारे में मुझे मालूम हो जायेगा।" राजपाल ने कहा।

वृद्ध ने सिर उठाकर उसकी ओर देखकर कहा—"तुम्हारी शादी अभी नहीं होगी। जो तुम्हारी पत्नी बनेगी, वह इस समय तीन वर्ष की लड़की है। जब तक वह सत्रह वर्ष की नहीं हो जायेगी, तब तक तुम्हारा विवाह नहीं होगा।"

"तो चौदह वर्ष तक मेरी शादी नहीं होगी? मुझे विश्वास नहीं होता, असम्भव।" राजपाल ने कहा।

"उधर देखो, जो वह लड़की उस बूढ़ी कानी औरत की गोद में है, वह ही तुम्हारी होनेवाली पत्नी है।" वृद्ध ने कहा।

राजपाल जल्दी जल्दी सीढ़ियों पर चढ़कर बूढ़ी के पास आया। वह कानी तो थी, फटे पुराने कपड़े भी पहिन रखे थे। वह लड़की को सीढ़ी पर बिठाकर गंगा में स्नान करने के लिए सीढ़ियों से उतरकर गई। उस लड़की की उम्र तीन वर्ष की

थी। वह लड़की उस बूढ़ी की ही लड़की होगी।

राजपाल को यह देख बड़ा बुरा लगा कि वह लड़की उसकी पत्नी बनेगी। जब उसने उस वृद्ध को खोजा, तो वह कहीं दिखाई नहीं दिया। राजपाल यह न निर्धारित कर सका कि उसका विश्वास किया जाये या न किया जाये। उसे लगा, बिना उस लड़की को मारे उसे चैन न मिलेगी।

उसने अपने मित्र की प्रतीक्षा करनी नहीं चाही। यदि काम पूरा हो गया होता तो वह अब तक आकर उससे मिल ही लेता। शायद काम नहीं हुआ होगा।

यह सोच राजपाल शहर की ओर निकल पड़ा। कुछ दूर जाने के बाद उसे दरबार का एक नौकर दिखाई दिया। राजपाल ने उसे पास बुलाकर कहा—"अरे एक छोटी लड़की के रूप में एक पिशाचिनी है। यदि तुमने उसे चाकू से मार दिया तो तुम्हें दस वराह दूँगा।"

"पिशाचिनी को तो मारना ही होगा। बताइये वह कहाँ है? मैं अभी उसे मारकर आता हूँ।" नौकर ने कहा।

राजपाल उसे लेकर जब पीछे मुड़ा तो कानी स्नान करके लड़की को उठाकर नदी से जाती हुई दिखाई दी। "वह देखो, वही लड़की, जो उस औरत की गोद में है। तुम अपना काम पूरा करके मेरे पास आओ।" राजपाल यह कहकर चला गया। क्योंकि वह अपनी आँखों एक शिशु की हत्या नहीं देखना चाहता था।

नौकर बूढ़ी से मिला। उसके पीछे पीछे चलता गया। धीमे से उसने छुरा निकाला। वह उससे लड़की को मारनेवाला ही था कि उसने बड़ी आँखें करके उसकी

ओर देखा। उन आँखों को देखकर नौकर को लगा कि वह मामूली लड़की ही थी। उसकी हत्या करने के लिए उसके हाथ नहीं उठे। उसने छुरी से उसकी भौहों पर छोटी-सी खरोंच की। फिर वह सिर पर पैर रखकर भाग गया।

वह राजपाल के पास गया। उसने यह कहकर कि पिशाचिनी को उसने मार दिया था, अपना ईनाम वसूल लिया।

राजपाल को बड़ा पश्चात्ताप हुआ कि उसने एक शिशु की हत्या करवा दी थी। पर वह यह सोच सन्तुष्ट भी हुआ कि वह लड़की उसकी पत्नी न होगी। उसने विवाह करने के लिए बहुत-से प्रयत्न किये, पर एक में भी वह सफल न हुआ। समय बीतता गया। राजपाल की नौकरी में भी तरक्की होती गई। चौदह वर्ष बीत गये। राजपाल के ऊपर एक नया न्यायाधिकारी आया। राजपाल की योग्यता, कार्यकुशलता, ईमानदारी देखकर उसे अचरज हुआ कि क्यों नहीं उसकी तब तक शादी हुई थी।

"विवाह करने के लिए बहुत दिनों से प्रयत्न कर रहा हूँ। परन्तु अभी तक अपने प्रयत्न में सफल नहीं हुआ हूँ।" राजपाल ने कहा।

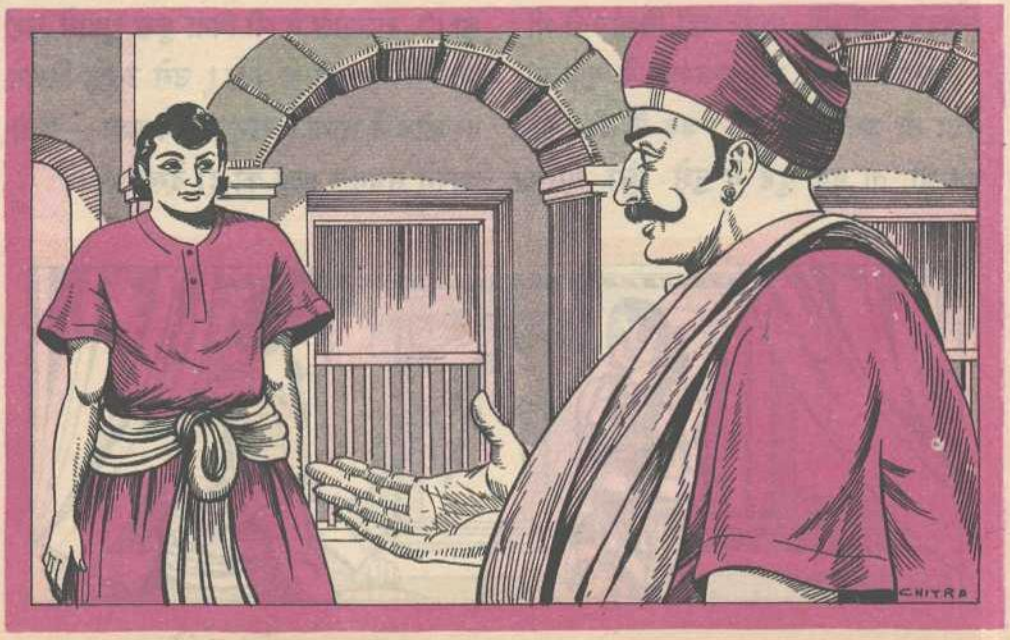

"मेरी एक सयानी लड़की है। बड़ी सुन्दर है। काफ़ी पढ़ी लिखी है। काम काज में भी अच्छी है। उससे शादी कर लो।" अधिकारी ने कहा।

राजपाल बड़ा खुश हुआ और शादी के लिए मान गया। अधिकारी की लड़की का उससे विवाह हो गया, उसके बदन पर आभूषण ही आभूषण थे। वह बड़ी सुन्दर लगती थी। जब वह गृहस्थी करने आयी तो राजपाल का जीवन स्वर्गतुल्य हो गया।

परन्तु उसकी पत्नी अपने बालों को माथे के दायें, दाग पर डाले रखती, वहाँ एक आभूषण भी पहिनती। जब वह और आभूषणों को निकाल देती थी, उसको नहीं निकालती थी।

इसके बारे में जब राजपाल ने एक बार पूछा तो उसने कहा—"जब मैं तीन साल की थी, तो एक दुष्ट ने मुझे छुरा मारकर मारना चाहा। फिर माथे पर छोटा-सा घाव करके वह चला गया। वह घब्बा भद्दा लगेगा यह सोचकर यूँ बाल बनाती हूँ।"

राजपाल चकित हो उठा। "तो उस दिन जो तुम्हें नदी पर ले गई थी, वह कानी स्त्री तुम्हारी माँ नहीं थी?"

इस प्रश्न पर उसको और आश्चर्य हुआ। "आप उस स्त्री को कैसे जानते हैं? वह मुझे पालनेवाली आया थी। मैं इस अधिकारी की असली लड़की नहीं हूँ। भाई की लड़की हूँ। मेरे भी बचपन में आपकी तरह माँ बाप गुज़र गये थे। उस कानी आया ने ही मुझे पाला था। मेरे चाचा ने बाद में मुझे गोदी ले लिया था।" राजपाल ने भी बिना कुछ छुपाये सब कुछ अपनी पत्नी से कहा। उसे उसके निश्चय पर क्रोध न आया। परन्तु उसने कहा—"तो आपने सचमुच ब्रह्मा को ही देखा था।"

घास का कुड़ता

बहुत पहिले जापान के एक गाँव में ओटोको नाम का एक अवारा हुआ करता था। वह गाँववालों को तरह तरह से तंग करता और उनकी गालियाँ सुना करता। उसे कोई काम न आता था।

एक दिन वह यूँहि खाली बैठा था। उसने एक बाँस लिया। उसे ठीक ठाक किया। उससे एक लम्बी नली-सी बना ली। दुर्बीन-सी। उसने जब उसमें से देखा, तो उसे हवा में टेन्गु जाति का एक पिशाच दिखाई दिया। उसे तंग करने के लिए ओटोको ने निश्चय किया।

टेन्गु जाति के पिशाच से छेड़ छाड़ करना बड़ा खतरनाक था। सिवाय ओटोको जैसे मूर्खों के बाकी सब उनसे दूर ही रहा करते थे।

ओटोको ने जो पिशाच देखा था, उसकी बड़ी लम्बी नाक थी। उसके कन्धों पर अलंकारार्थ दो पंख थे। उसने सूखी घास का बना एक कुड़ता पहिन रखा था। जब वह पिशाच उसकी ओर उड़ता आ रहा था, तो ओटोको ने सोचा वह उसका घास का कुड़ता लेकर रहेगा।

पिशाच ज़मीन पर उतर रहा था कि ओटोको ने बाँस में से आकाश की ओर देखते हुए कहा—"ओहो, ओहो, कमाल है।" पिशाच ने भी जानना चाहा कि क्या बात थी। ओटोको के चारों ओर मँडराते हुए उसने कहा—"क्या है वह? ज़रा मुझे भी देखने दो।"

"क्या? मैंने इतनी मुश्किल से यह दुरबीन बनाई है और तुम इसे लेना चाहता

जापानी लोक कथा

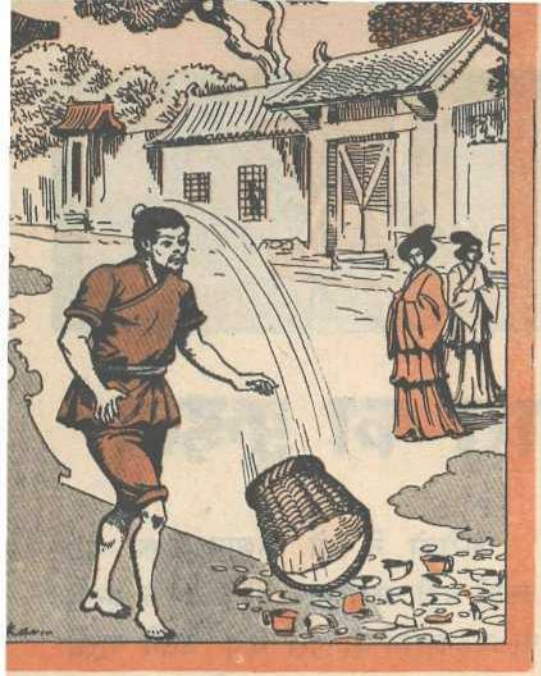

हो? वाह, इसमें से चन्द्रमा कितना सुन्दर दिखाई देता है। पर्वत कितने सुन्दर दिखाई देते हैं? घाटियाँ कितनी सुन्दर! और कितने सुन्दर मैदान...." ओटोको ने कहा।

वह ज्यों ज्यों चन्द्रमा का वर्णन करता गया, त्यों त्यों पिशाच दुरबीन में से चन्द्रमा देखने के लिए उतावला होने लगा। उसने कहा कि यदि ओटोको ने उस दुरबीन में से देखने दिया तो उसे वह अपनी चप्पल दे देगा, टोपी दे देगा। वह तब तक न माना जब तक वह अपना घास का कुड़ता देने को तैयार न हो गया। फिर उसे दुरबीन देकर उसका घास का कुड़ता लेकर वह चम्पत हो गया। पिशाच ने दुरबीन में से बहुत देर तक देखा, परन्तु उसे कुछ भी न दिखाई दिया।

पिशाच के ओझल होते ही ओटोको ने घास का कुड़ता पहिना। वह अदृश्य हो गया। उसके साथ कुड़ता भी अदृश्य हो गया। ओटोको के आनन्द की सीमा न थी। वह भागा भागा गाँव की बड़ी गली में गया और वहाँ शरारतें करने लगा। लोगों के सिर का बोझ उसने फेंक दिये, दुकानों की चीज़ें इधर उधर फेंक दीं। लोगों की नाक खींची।

गली में कुहराम मच गया। लोग जहाँ तहाँ छुप गये और गली की ओर आश्चर्य से देखने लगे। गली में कोई न रहा, पर विचित्र घटनायें घटती जा रही थीं। निर्जन गली में से एक बड़ा आदमी बड़े ठाट से चला आ रहा था। उसे यकायक ऐसा लगा, जैसे किसी ने उसका बाँया कान मरोड़ दिया हो। जब उसने गुस्से में पीछे मुड़कर देखा, तो किसी ने उसका दाँया कान मरोड़ा। जब उसने चारों ओर देखा, तो दरवाजे और खिड़की के पीछे खड़े लोगों को डर के साथ हँसी

भी आयी। हँसते हँसते उनके पेट फूल गये। चूँकि वे देख रहे थे कि एक शानदार आदमी अपने आप कुछ ऐसी हरकतें कर रहा था, जैसे पगला गया हो।

इतने में एक किसान कीमती कपड़े खरीदकर उन्हें हाथ में रखकर चला आ रहा था। यकायक वे कपड़े हवा में उड़े और दूर जाकर इधर उधर जाने लगे। वे इधर उधर चलते गली के पास की गन्दी नाली में जा गिरे।

एक और जगह कुछ मछलियाँ आयीं, जो तभी तभी पकड़ी गई थीं। रात के खाने के लिए स्त्रियाँ मछलियाँ चुन रही थीं, खरीद रहीं थीं। इतने में एक बड़ी मछली, जैसे यकायक जी उठी हो, हवा में उठी और तैरती-सी जाने लगी। मछली बेचनेवाले उसके पीछे दौड़े। जब वे पास आये, तो वह धड़ाम से उनके पैरों के पास गिरी और धूल में छटपटाने लगी।

इस प्रकार कुछ देर तक शरारत करके थक थकाकर ओटोको घर गया। वह सामने के दरवाजे से अन्दर आया। घास का कुड़ता उतारकर जब अपनी माँ के पास गया, तो उसकी माँ सहमी....क्योंकि उसने

अपने लड़के को अन्दर जाते नहीं देखा था। जब वह सो रहा था, तो उसने घास का कुड़ता देखकर सोचा, "छी, छी, यह गन्दा कुड़ता इसे कहाँ मिला? उसे ले जाकर उसने चूल्हे में झोंक दिया। तुरत वह जलकर राख हो गया।

ओटोको ने उठकर अपने घास के कुड़ते की खोज की। जब उसने माँ से पूछा, तो उसने कहा कि उसे उसने चूल्हे में झोंक दिया था। ओटोको को बड़ा गुस्सा आया। यह सोच कि कुड़ते की महिमा शायद राख में भी हो, उसने सारी राख उठाकर एक टोकरे में भर ली। फिर वह उस टोकरी को आँगन के एक कोने में ले गया। और उस राख को अपने सारे शरीर पर पोतने लगा। जब उसने अपने शरीर के उन भागों को जिन पर उसने राख पोती थी, अदृश्य होते देखा तो उसे आश्चर्य होने लगा। यह साफ़ हो गया कि घास के कुड़ते का प्रभाव उसकी राख में भी था। जल्दी ही ओटोको पूरी तरह अदृश्य हो गया।

वह खुशी खुशी शहर की बड़ी गली की ओर निकला। शाम का समय था। बड़ी भीड़ थी। जब वह अदृश्य हो भीड़ में चल रहा था, तो उस दुकान से उसको बदबू आयी, जहाँ "साकी" नाम की शराब बेची जा रही थी। दुकान में "साकी" पीने के लिए बहुत-से लोग आये हुए थे। दुकानदार एक बड़े पीपे में से सब को साकी दे रहा था।

पीपा के पास किसी को न पा.... ओटोको पीपे की नली के पास गया, नली में मुख लगाकर शराब गटकने लगा। गटकने की ध्वनि तो दुकानदार को सुनाई दी, पर वह यह न जान सका कि वह क्यों आ रही थी। उसने पास आकर

देखा, तो मनुष्य का मुख दिखाई दिया। ओटोको मुख पर से, शराब लगने के कारण, वह राख चली गई थी। दुकानदार अभी अचम्भे में था कि कैसे बिना मनुष्य के मनुष्य का मुख था। साकी की धारा के कारण ओटोको की दाढ़ी भी कुछ कुछ दिखाई देने लगी।

दुकानदार जब जोर से चिल्लाया, ओटोको डरकर खड़ा हो गया। वह पसीना पसीना हो गया। जहाँ जहाँ उसको पसीना आया था, वहाँ वहाँ उसका शरीर चित कबरा-सा बाहर निकल आया था।

यह सोच कि उसका खेल खतम हो गया था, ओटोको दुकान से बाहर आया और गली में से भागने लगा। दुकान में जो जो थे, वे सब उसके पीछे भागने लगे। ओटोको भागता भागता एक नहर में कूदा। उसके शरीर पर लगी राख पूरी तरह धुल गई। उसने सिर ऊपर किया। वह ठंड से काँप रहा था, पर उसे पानी में ही रहना पड़ा।

उसका जो पीछा करते आये थे, उन्होंने अब ओटोको को पहिचान लिया। उसे बाहर निकाला और उस पर एक किमानो ढाँप दिया।

"अरे तुम्हारी क्या गत हुई है.... ओटोको?" गाँव के मुखिया ने पूछा।

ओटोको ने शर्मिन्दा होकर कह सुनाया कि उसने कैसे धोखा देकर टेन्गु पिशाच का घास का कुड़ता लिया था, उसकी कहानी सुनकर उन्होंने कहा—"अरे तुम टेन्गु पिशाच को ही धोखा देने चले थे? कितने मूर्ख हो।" वे इतना हँसे कि वे उसकी शरारत माफ़ करके चले गये।

गंगा का गर्व भंग

एक गाँव में अनन्त नाम एक किसान रहा करता था। उसकी एक बहिन थी, जिसका नाम गंगा था। उसको बहिन से बड़ा प्यार था। परन्तु गंगा को शुरु से ही बड़ा घमंड था। उसे भाई पर कुछ भी आदर न था, परन्तु अनन्त को इसकी परवाह न थी।

अनन्त ने यह सोच कि उसकी बहिन सुख से रहेगी, एक अच्छा सम्बन्ध खोजा और अपनी दो एकड़ ज़मीन दहेज में देकर, गंगा की शादी कर दी। फिर उसने स्वयं एक गरीब घर की लड़की से शादी कर ली।

गंगा अपने ससुराल गई और अनन्त की पत्नी गृहस्थी करने आयी। उसके लगातार बच्चे हुए। उसकी गृहस्थी का भार बढ़ गया। उनकी हालत इतनी बिगड़ गई कि जिस दिन काम करते, उस दिन खाना मिलता, नहीं तो नहीं।

जब बच्चे भूख के कारण रोते कराहते, तो वे दिल मसोसकर रोया करते। वे बच्चे जिनको खेलना कूदना चाहिए था, भूख के कारण सूखे जा रहे थे। एक दिन अनन्त की पत्नी ने उससे कहा—"इतने कष्ट उठा रहे हैं, क्यों नहीं एक बार अपनी बहिन के पास हो आते? जो मदद वह कर सकेगी, वह करेगी?"

"वे भी कौन-से ऐसे धनी हैं?" अनन्त ने पूछा।

"हमारी हालत देखकर, यदि आपकी बहिन मदद करे, तो ठीक है, नहीं तो देखकर चले आइये।" पत्नी ने कहा।

रामेश्वर

अनन्त न न कर सका। अगले दिन सवेरे माँड पीकर, वह गंगा की ससुराल के लिए निकल पड़ा। दिन-भर चलकर वह शाम को उस गाँव में पहुँचा। गंगा ने थोड़ी दूर पर अपने भाई को आते देखा। भाई के फटे कपड़े, सूखे बाल, काँटा-सा शरीर फँसी आँखें देखकर, गंगा घबरा गई। भाई पर तरस खाना, तो अलग, उसने सोचा कि वह उसकी हरी भरी गृहस्थी पर नज़र डालने आ रहा था।

अनन्त ने अपनी बहिन को दरवाज़े पर देख लिया था, पर जब उसने फिर उसे देखना चाहा, तो वह वहाँ न थी। उसने सोचा कि शायद, अन्दर पैर धोने के लिए, पानी लाने गई होगी। इस बीच गंगा ने निश्चय कर लिया, जैसे भी हो वह अपने भाई को जल्दी ही भेज देगी। वह अन्दर गई, उसने अपनी रेशमी कीमती साड़ी उतार कर, फटी पुरानी साड़ी पहिन ली और एक मट्टी के बरतन में पानी लेकर बाहर आई।

एक मिनिट में बहिन में इतना परिवर्तन देखकर, अनन्त ने सोचा कि शायद थोड़ी देर पहिले उसने किसी और को देखा था।

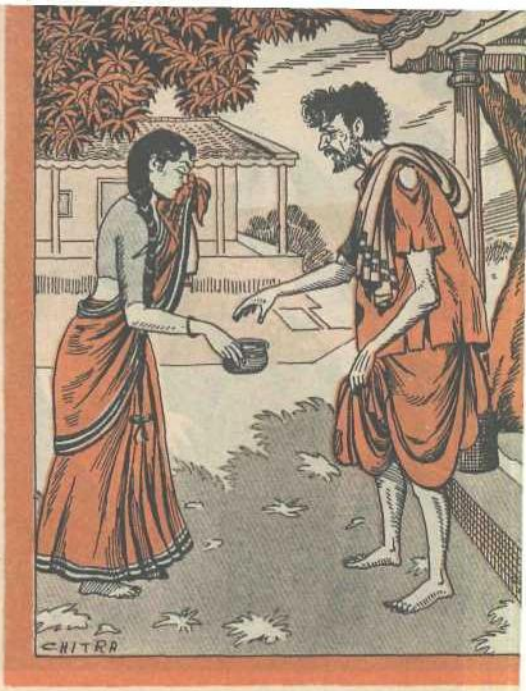

दरवाज़े के पास भाई को खड़ा देख, गंगा ने बनावटी रोना रोते हुए कहा—"इतने दिनों बाद मैं तुम्हें याद आई? तुमने यह सोच शादी की थी कि मैं सुखी रहूँगी, पर यहाँ खाने को भी मुश्किल से मिल रहा है।"

"अनन्त अपनी बहिन की परिस्थिति पर बड़ा दुःखी हुआ। यदि वह अन्दर आया, तो भेद खुल जायेगा, यह सोच, गंगा ने बाहर ही उसके लिए एक टूटी फूटी खाट डाल दी। उस पर अपना अंगोछा डालकर, अनन्त ने अपनी पीठ सीधी की।

यह जानकर कि खेत से उसके पति के आने का समय हो गया था गंगा पिछवाड़े के रास्ते से उससे मिलने गई। उसे बताया कि भाई आये हुए थे। उसे बड़ी खुशी हुई कि शादी के इतने दिनों बाद उनका साला आया था। जब पति ने उसका ईशारा न समझा, तो गंगा ने कहा—"यदि उनको मालूम हो गया कि हमारे पास रुपया पैसा है, तो हमसे वह रुपया माँगेगा। इसलिए हम दिखायेंगे कि हम गरीब हैं।"

उसका पति मान गया। गंगा ने एक टूटी खाट अपने पति के लिए भी बाहर रख दी, उसका पति भी उसी पर लेट गया। वह अपने साले से ही बात करने के लिए हिचक रहा था। उसने यूँ दिखाया, जैसे अनन्त को उसने देखा ही न हो।

उस दिन कोई त्यौहार था, गंगा ने कुछ पकवान बनाये थे। यदि अनन्त न आया होता, तो पति पत्नी बड़े मज़े में उन्हें खाते। गंगा के पति के पेट में चूहे कूद रहे थे। पत्नी ने कहा था कि वह रात को उसे भोजन परोसेगी। वह इसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

अनन्त को नीन्द नहीं आयी। उसे बहिन की गरीबी सता रही थी। गंगा का पति, अपने साले की बुरी हालत देखकर तरस खा रहा था। फिर भी उसने अपनी पत्नी का कहा न बताना चाहा। सरदी बढ़ रही थी। वह अंगीठी, जो उसके पत्नी ने उसके खाट के नीचे रखी थी उसे साले की खाट के नीचे सरका दी। इसी में उसने तसल्ली कर ली।

आधी रात हो गई। गंगा का पति गाढ़ी नीन्द में था। अनन्त न सो सका। इतने में गंगा धीमे धीमे वहाँ आयी।

उसने खाटें टटोलीं। यह सोच कि जिस खाट के नीचे अंगीठी थी, उसी पर उसका पति था, "आओ, भोजन के लिए।" यह कह वह चली गई।

अनन्त को अपनी बहिन का व्यवहार अच्छा न लगा। उसने सोचा कि शायद पति से डर डराकर, वह उसको अलग भोजन परोस रही थी। वह अपना अंगोछा ओढ़कर, अन्दर चला गया।

भोजन पकवान आदि के साथ परोसा हुआ था। दीये की रोशनी ज़रा कम थी। "भोजन करो। यदि और कुछ चाहो, तो बगल में हंड़ियों में है। जितना चाहो, उतना ले लो।" गंगा कहकर, चली गई। उसने सोचा कि उसका पति ही अंगोछा ओढ़कर आया था। ताकि पति की खाट को वह अन्धेरे में जान सके उसने उसके नीचे अंगीठी रखी थी। यह बात उसने अपने पति से नहीं कही थी। वह बाहर जाकर, दरवाज़े के पास बैठ गई, जैसे पहरा दे रही हो।

अनन्त ने यह सोच कि उसकी बहिन ने बड़े प्रेम से भोजन परोसा था, पेट-भर कर खाया। हाथ धोलिये। चूँकि बहिन

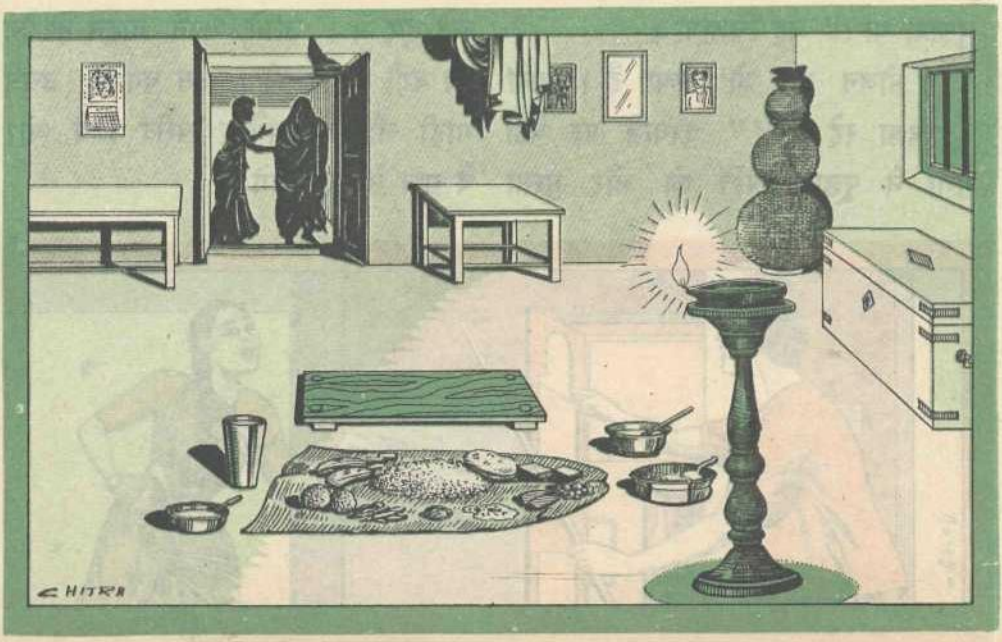

कह गई थी कि अगर अधिक की ज़रूरत हो, तो हंड़ियों में से ले ले, इसलिए उसने अंगोछा बिछाकर, उस पर हंड़ियाँ खाली कर दीं। उनमें चावल, पकवान आदि कितनी ही चीज़े थीं। उन सबकी उसने पोटली बाँध ली। यह सोच कि यदि उसने बहिन को बुलाया तो जीजा उठ जायेगा, पिछवाड़े से बाहर गया और घर की ओर निकल गया।

थोड़ी देर बाद, गंगा का पति सोकर उठा। उसे बड़ा गुस्सा आया कि उसको पत्नी ने खाने के लिए क्यों नहीं बुलाया था। "अरे, खाने के लिए क्यों नहीं बुलाया था?" वह चिल्लाया।

"भोजन कर जो लिया है। क्यों यूँ चिल्ला रहे हो?" दरवाज़े पर बैठी गंगा ने पूछा। पति को और गुस्सा आ गया। उसने उसको लताड़ा। जो कुछ हुआ था, वह सबको पता लग गया।

"तुमने अंगीठी क्यों बदल दी थी?" गंगा ने पूछा।

"मेरी मर्ज़ी। अपने भाई को ही तुमने खाना आज नहीं दिया, कल अगर मेरी तरफ़ के रिश्तेदार आये, तो न मालूम तुम क्या करो? यही करोगी। जाओ बाहर।" पति ने गंगा को घर से बाहर निकाल दिया।

अनन्त ने अपनी बहिन के घर से लायी हुई पोटली खोली, उसमें कुछ रुपये भी रखे हुए थे। उसने अपने बहिन के प्रेम की बड़ी प्रशंसा की। उस धन से, उसने गाड़ी और बैल वगैरह खरीद लिये और वे सुख से रहने लगे।

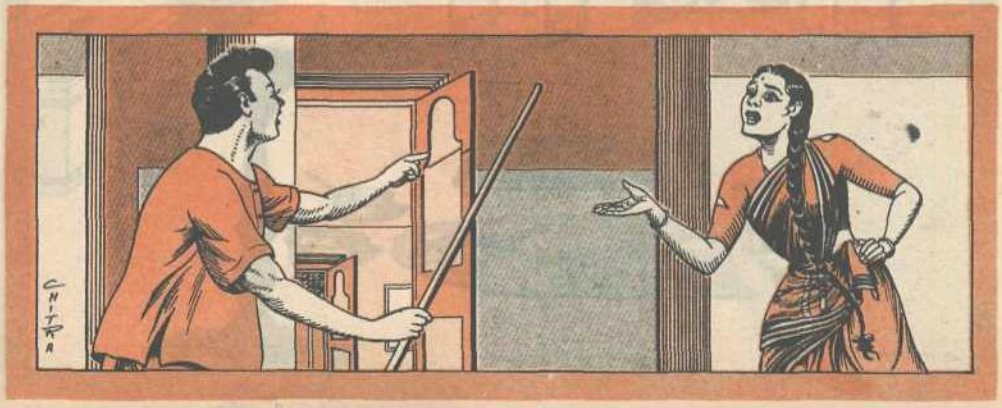

गहनों का बक्सा

एक दिन रात को बहुत अन्धेरा होने के बाद एक परिवार यात्रा करता, पन्नालाल के घर आया। परिवार का मुखिया जगन्नाथ था। उसके साथ उसकी पत्नी, पाँच वर्ष का लड़का और एक छोटी लड़की थी। जगन्नाथ की ससुराल, पन्नालाल के गाँव के दक्षिण की ओर, और अपना गाँव उत्तर की ओर था। वह परिवार के साथ ससुराल ऐसे समय पर निकला था कि शाम तक वह पैदल चलकर पन्नालाल के गाँव पहुँच सके। जगन्नाथ ने जान बूझकर ही यूँ किया था। चूँकि उसकी नीयत ठीक न थी। होने को तो उसके एक दुकान थी, पर जब कभी मौका मिलता, वह चोरी करता। यह पत्नी भी जानती थी।

जगन्नाथ ने पन्नालाल के बारे में बहुत सुन रखा था। उसका ख्याल था कि वह बिल्कुल नादान था। उसको आसानी से ठगा जा सकता था। वह मौके की प्रतीक्षा में था। पर जब जगन्नाथ का परिवार पहुँचा, तो पन्नालाल गाँव में नहीं था। दो दिन पहिले किसी और गाँव गया था। फिर भी मीनाक्षी और उसकी सास ने उनको कोई कमी न होने दी। उनकी आवभगत की। उनको उस रात भोजन खिलाया। बच्ची को दूध दिया। उनके सोने के लिए कमरे में व्यवस्था की।

जगन्नाथ लेटा जो बगल के कमरे में बातें हो रही थीं, उन्हें ध्यान से सुन रहा था। पन्नालाल की माँ अपनी बहू से कह रही थी। "मीनाक्षी, कल जो तुमने

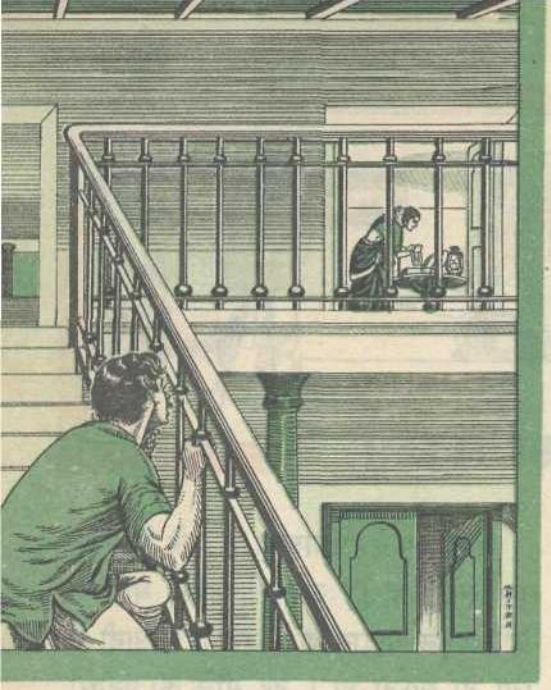

शादी के लिए गहने पहिने थे, वे अभी यहीं है? क्यों नहीं उन्हें बक्से में रख लिया था?" जगन्नाथ ने यह सुना।

सास के यह कहने के कुछ देर बाद, जगन्नाथ जान गया कि मीनाक्षी एक हाथ में दीया और दूसरे हाथ में जवाहरात लेकर ऊपर गई थी। जगन्नाथ उसके पीछे पीछे सीढ़ियों पर गया। उसने देखा कि मीनाक्षी किस बक्से में जवाहरात रख रही थी और फिर जाकर चुप चाप अपने बिस्तरे पर लेट गया। थोड़ी देर बाद मीनाक्षी उतर आयी और अपने कमरे में चली गई।

आधी रात के समय जब सब सो रहे थे, तो जगन्नाथ चुपचाप बिल्ली की तरह सीढ़ियों पर चढ़कर गया। उस कमरे में गया, उस पर ताला भी नहीं लगा था। बक्सा लेकर वह नीचे चला आया, मुँह अन्धेरे वह उठा, बक्से को बाहर ले जाकर अन्धेरे में एक जगह रखकर अन्दर आकर उसने अपनी पत्नी और लड़के को उठाया और निकल पड़ा। इस गड़बड़ी में पन्नालाल की माँ और मीनाक्षी भी उठ गईं। जगन्नाथ ने उनसे कहा—"अब हमें विदा दीजिये। हम जायेंगे। हमें बहुत दूर जाना है।"

जगन्नाथ का परिवार फिर पैदल निकल पड़ा। जगन्नाथ भी वह बक्सा पीठ पर रखकर, जिसे उसने पहिले छुपा दिया था, चल रहा था। दुपहर को वे एक गाँव पहुँचे। वहाँ आराम करके फिर वे निकले। लड़का चल नहीं पा रहा था। जगन्नाथ की पत्नी, लड़की को गोद में लेकर चल रही थी इसलिए उसके पैर भी सूजने लगे थे। सब रास्ते के किनारे लेट गये। जगन्नाथ सोचने लगा, क्या अच्छा हो कि उस तरफ़ से कोई गाड़ी गुज़रे और वह उनको उस पर सवार कर ले।

इतने में एक गाड़ी दिखाई दी। पर वह उस दिशा से आ रही थी, जिस दिशा की ओर वे जा रहे थे। "वह गाड़ी हमारे गाँव की ओर नहीं जायेगी?" जगन्नाथ कह ही रहा था कि उसका लड़का हाथ उठा उठाकर, "गाड़ी" "गाड़ी" चिल्लाने लगा।

पन्नालाल ही गाड़ी में था और वह अपने गाँव की ओर जा रहा था। उसने गाड़ी रोकी, "गाड़ी पर सवार होगे?" पन्नालाल ने लड़के से पूछा। जगन्नाथ ने बताया कि वह कौन-सा गाँव जा रहा था।

"कोई बात नहीं। चलो, सवार होओ। वह तो यहाँ से बहुत दूर नहीं है। तुम्हें उतारकर मैं कल सवेरे अपने गाँव चला आऊँगा।" पन्नालाल ने कहा। वह गाड़ी से उतर आया और जब वह बक्सा गाड़ी पर रख रहा था, तो उसे ऐसा लगा, जैसे वह बक्सा उसका ही हो। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। जब उसने ज़रा ध्यान से देखा, तो उसने उस पर अपने पिता का नाम "सोमलाल" भी देखा। उसका आश्चर्य और भी बढ़ गया।

सब गाड़ी पर सवार हो गये। पन्नालाल ने गाड़ी मोड़ी। जगन्नाथ के गाँव की ओर चलाने लगा। "इस तरह का बक्सा

हमारे घर में भी है। उस पर सोमलाल लिखा है, मेरे पिताजी का नाम है वह।"

जगन्नाथ का माथा ठनका। उसने सम्भलकर कहा—"अचरज की बात है, क्या तुम्हारे पिताजी का नाम भी यही है? इसी कारण हम सौभाग्य से यूँ मिले हैं?"

"क्या आपका नाम भी पन्नालाल है?" पन्नालाल ने पूछा।

जगन्नाथ और उसकी पत्नी घबराये। जगन्नाथ ने पत्नी को ईशारा करके बताया कि वह न डरे। "आपने भी खूब पहिचाना। मेरा नाम पन्नालाल है, यदि

हम दोनों का नाम भी एक है, तो अवश्य कोई पूर्वजन्म का सम्बन्ध है।"

जल्दी ही अन्धेरा हो गया। गाड़ी एक छोटे गाँव में पहुँची। जगन्नाथ जानता था कि वहाँ दो तीन उजड़े घर थे। उसने गाड़ी को एक घर के सामने रोककर कहा—"यही हमारा घर है।"

जब उसने बक्सा उतार दिया, तो उसकी पत्नी और लड़का भी उतर गये। पन्नालाल यह कहकर कि पास ही उसके एक परिचित का घर था और वहीं वह रात काट देगा, आगे चला गया। फिर जगन्नाथ अपनी पत्नी और लड़के को एक और झोंपड़े के पास ले गया और रात वहीं उन्होंने काटने की सोची।

जगन्नाथ ने बक्स में से गहने लेकर उसको गायब कर देने की ठानी। वह हथौड़ा वगैरह लाने के लिए निकला। उसकी पत्नी भी रोटी और दूध की तलाश में निकली। झोंपड़े में लड़का और बच्ची रह गये थे।

लड़का, बच्ची को खिलाता, उसके पास बैठ गया। उस सन्दूक के दो ताले थे। एक ताला तो सन्दूक में ही था और दूसरा ऊपर से लगाया हुआ था। सन्दूक का ताला मीनाक्षी ने ठीक तरह लगा दिया था। पर दूसरा ताला ठीक दबाया नहीं था। वह दबाकर लगानेवाला ताला था। इसलिए वह ठीक लगा न था।

लड़के ने उस ताले को जोर से दबा दिया। वह ताला लग गया, लड़के का हाथ उसमें फँस गया। लड़का जोर से रोने लगे।

उसका चिल्लाना सुनकर पड़ोस के घरवाले आये। "अरे....अरे, इस लड़के की अंगुली फँस गई है। ताला खोलना है। ताली कहाँ है?"

थोड़ी देर बाद जगन्नाथ की पत्नी दूध, रोटी लेकर वहाँ आयी। लड़के की हालत

देखकर उसने कहा—"भाई, लड़के को बचाइये। आपका भला होगा।" वह लोगों को मनाने लगी। लोग जमा होने लगे। उनमें पन्नालाल भी था।

उसने लड़के को देखकर कहा—"अरे, ताला खोलो। नहीं तो उस बिचारे की अंगुलियाँ नहीं निकलेंगी। इसका पिता कहाँ है?"

वह यह कह ही रहा था कि जगन्नाथ हथौड़ा, छेनी वगैरह लेकर वहाँ आया। पन्नालाल को देखते ही उसको काठ मार गया। पन्नालाल ने उसके हाथ के औजार लेकर कहा—"अरे, अच्छे बक्से का सत्यानाश न करो। बिना ताला खोले उसकी अंगुलियाँ नहीं निकलेंगी। यदि तुमने ताला तोड़ने की कोशिश की, तो लड़के की अंगुलियों के टूट जाने का खतरा है। ताली निकालो।"

"सच बता दीजिये।" जगन्नाथ की पत्नी ने उसके कान में कहा।

"मेरे पास इसकी ताली नहीं है।" जगन्नाथ ने कहा।

"देखें, मेरी तालियाँ लगती हैं कि नहीं? मेरा नाम ही आपका नाम है।

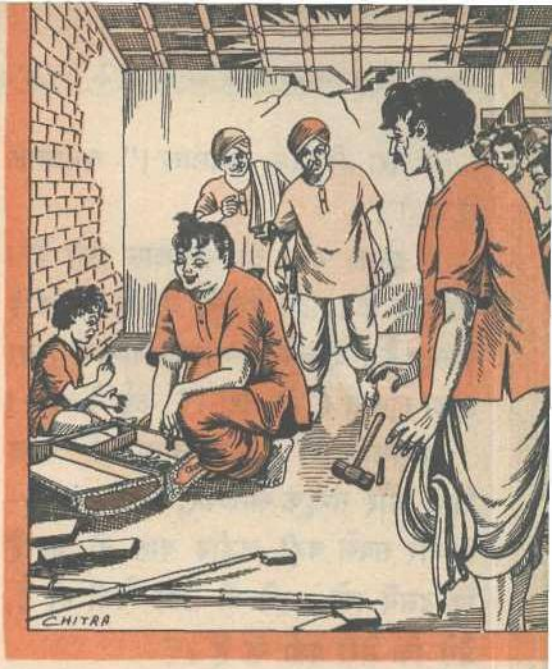

मेरे पिता का नाम आपके पिता का नाम है, हमारे बक्से की तरह ही आपका बक्सा है—मेरी ताली भला क्यों नहीं लगेगी?" पन्नालाल ने तालियों के गुच्छे में से एक ताली निकाली। उसने ताला खोल दिया। लड़के की अंगुलियाँ निकल आयीं।

पन्नालाल की ताली से ताले का खुलना देखकर, बक्से की चाबी जगन्नाथ के पास न देखकर, उसकी बातें सुनकर, लोगों ने जानना चाहा कि वह कौन था, "आपका नाम क्या है?"

"मेरा ही नाम, पन्नालाल।" पन्नालाल ने कहा।

"इसका नाम तो पन्नालाल नहीं है। जगन्नाथ है। इस ईलाके में इसे हर कोई जानता है। देखिये कि आपकी चाबी से दूसरा ताला खुलता है कि नहीं?" कई ने कहा।

पन्नालाल ने दूसरा ताला भी खोल दिया और सन्दूक खोलकर, उसने कहा—"और सबसे बड़ी अजीब बात तो यह है कि इसमें रखे गहने भी ठीक वैसी ही हैं, जैसे कि मेरी पत्नी के हैं।"

लोगों ने सुन रखा था कि जगन्नाथ चोर था। कई ने उसे पकड़कर मारना चाहा। परन्तु पन्नालाल ने उनको रोकते हुए कहा—"जल्दी न कीजिये। क्या उनको बिना मालूम हुए, हमें मालूम होगा कि उन्होंने चोरी की है?"

जगन्नाथ की पत्नी ने पन्नालाल के पैरों पर पड़कर कहा—"हुज़ूर, यह आपका ही सन्दूक है। एक दिन रात को आपके घर खाना खाकर, हम आपका बक्सा उठा ले आये थे। हमें माफ़ कीजिये।"

"ठहरो ठहरो, यदि आप कहेंगी कि यह मेरा ही बक्सा है, तो मैं इसे ले जाऊँगा। इसमें मेरा क्या जाता है? बिचारे लड़के की अंगुलियाँ बच गईं। यही काफ़ी है।" पन्नालाल ने कहा।

थोड़ी देर बाद सवेरा हो ही गया। पन्नालाल अपना बक्सा लेकर, अपने गाँव चला आया। पन्नालाल की माँ और पत्नी इसी अचरज में थे कि वह बक्सा जो रात था, कहाँ सवेरे चला गया था। इसलिए पन्नालाल को बक्सा लेकर आते देख, उनको बड़ा आश्चर्य हुआ।

उत्तरकाण्ड

अगस्त्य महर्षि ने राम को बताया कि सुकेश की सन्तान माल्यवन्त, माली, सुमाली ने कैसे लंका में, अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ रहते, वर प्राप्ति के गर्व में, तीनों लोकों में उत्पात मचाया था। फिर उसने इस प्रकार कहा :—

देवताओं और ऋषियों ने राक्षसों से तंग आकर, महेश्वर के पास आकर कहा—"जगद्रक्षक! सुकेश के लड़कों ने ब्रह्मा से वर पाकर, घमंड में देवताओं को स्वर्ग से भगा दिया है और उसको उन्होंने स्वयं ले लिया है। मुनियों के आश्रम और घरों को खाली कर दिया गया है। वे अपने को ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु, इन्द्र, यम, वरुण, चन्द्र, सूर्य आदि बता रहे हैं। वे हमेशा युद्ध के लिए सन्नद्ध रहते हैं। उन राक्षसों से और उनके परिवारों से हमारी रक्षा कीजिये। प्रभु।"

परन्तु महेश्वर को सुकेश के प्रति पक्षपात था। इसलिए उसने उनसे कहा—"देवताओ! महर्षियो! मैं उन राक्षसों को नहीं मार सकता। उनकी मृत्यु मेरे हाथों में नहीं है। मेरी बात सुनकर, आप यदि विष्णु के पास गये, तो वे उन्हें अवश्य मार सकेंगे।"

देवता आदि महेश्वर की जय करके, विष्णु के पास गये। वे उनके पास भी उसी तरह रोये धोये, जिस तरह महेश्वर के पास रोये थे।

उन्होंने उनसे सविनय प्रार्थना की कि त्रिकूट पर्वत पर स्थित लंका नगर में रहनेवाले राक्षसों को मार दें।

विष्णु ने उनको अभय देकर कहा—"मैं सुकेश और उसके तीनों लड़कों को जानता हूँ। मैं भी उनके व्यवहार को देखकर क्रुद्ध हूँ। मैं उनका संहार कर दूँगा। तुम भय न करो।" यह सुन, देवता बड़े खुश हुए। विष्णु की प्रशंसा करके, अपने घर चले गये।

यह बात लंका में मालूम हुई। माल्यवन्त ने अपने भाइयों से कहा—"देवता और मुनि मिलकर, हमें मरवाने की सोच रहे हैं। सुनते हैं, वे महेश्वर के पास जाकर, उनके पाँव पकड़कर गिड़गिड़ाये कि वे हमें मार दें। उन्होंने कहा कि यह उनके बस की बात न थी। विष्णु के पास जाने के लिए महेश्वर ने सलाह दी। उसकी सलाह के अनुसार, वे विष्णु के पास गये। उनके पास अपना रोना रोया। उन्होंने यह आश्वासन देकर कि वे हमें मार देंगे, उन्हें भेज दिया। यदि विष्णु ने हमें मारने का निश्चय कर लिया है, तो हमें सोचना होगा कि हमें क्या करना होगा—चूँकि उन्होंने हिरण्यकश्यपु जैसे, बलवान राक्षसों को भी मार दिया था। कई राक्षस जिनको कई वर प्राप्त थे, जिन्होंने कई यज्ञ कर रखे थे, कई अस्त्र पा रखे थे उनसे लड़कर, मारे जा चुके हैं। कोई निश्चय करने से पहिले, हमें ये बातें मन में रखनी होंगी।"

इस पर माली और सुमाली ने यूँ कहा—"हमने यज्ञ और दान कर रखे हैं। हमारे पास अनन्त ऐश्वर्य है। बलवान शत्रुओं को हमने जीता है। चाहे विष्णु हो या रुद्र या इन्द्र कोई भी हमारा सामना नहीं कर सकता। हमें देख तीनों लोक काँपते हैं। समझ में नहीं आता, विष्णु क्यों हमसे चिढ़े हुए हैं। इन देवताओं ने ही उनको भड़काया होगा। इसलिए चलो, हम सेना के साथ निकलें और उन देवताओं की खबर लें।"

इस प्रकार सोच विचार कर, वे राक्षस भाई युद्ध की तैयारियाँ करके, सेना के साथ स्वर्ग पर आक्रमण करने निकले। लंका से उनके साथ रथ, हाथी, घोड़े, ऊँट और उनके साथ आनेवाले वाहन, स्वर्ग को घेरने के लिए निकल पड़े। इस असंख्य राक्षस सेना का नेता माली था। इस प्रकार जब राक्षस लंका छोड़कर निकले, तो लगता था, जैसे लंका ही उजड़ गई हो। वह सुनसान लगती थी।

यह जानते ही कि राक्षस युद्ध के लिए निकल पड़े थे विष्णु अपना चमचमाता कवच पहिनकर, बाण, धनुष, शंख, चक्र,

गदा, खड्ग लेकर, पीताम्बर धारण करके, गरुड़ वाहन पर सवार होकर, युद्ध के लिए निकल पड़े। उनके देव सेना से मिलते ही दोनों पक्षों में घमासान युद्ध प्रारम्भ हो गया।

विष्णु ने अपने बाणों और चक्रों से कई राक्षसों को मार दिया। परन्तु माली ने विष्णु का मुकाबला किया, उनसे भयंकर युद्ध किया। विष्णु के वाहन गरुत्मन्त के सिर पर ज़ोर से प्रहार किया। उसने उनको युद्ध भूमि से भागने के लिए बाध्य किया।

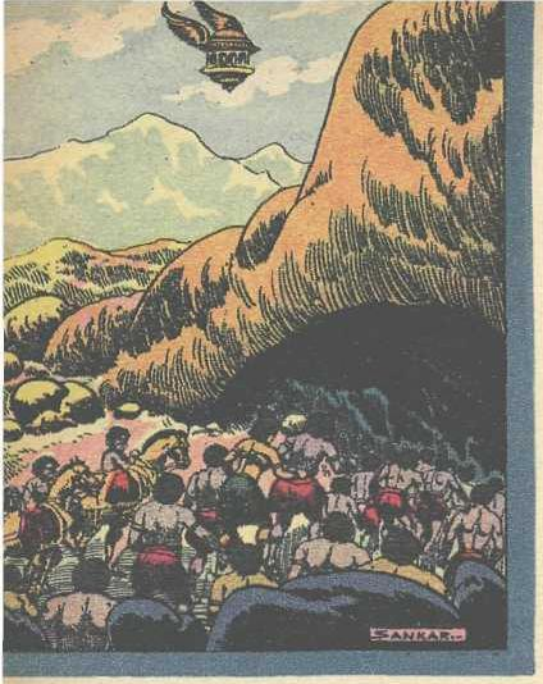

आखिर विष्णु ने अपने चक्र से, माली का सिर काट दिया। माली को मरता देख, सुमाली, माल्यवन्त अपनी राक्षस सेनाओं के साथ, लंका भाग गये। विष्णु उन राक्षसों को, पीछा करके मारने लगे।

यह देख, माल्यवन्त ने कहा—"तुम क्षत्रिय धर्म का पालन किये बगैर हमारा पीछा करके, हमें मार रहे हो। ऐसों को वीर स्वर्ग भी नहीं मिलेगा। यदि तुम युद्ध ही करना चाहते हो, तो आओ मुझ से युद्ध करो।"

"यदि तुम युद्ध भूमि से भाग गये और पाताल में भी जा छुपे, तब भी तुम्हें खोजकर मार दूँगा। मैंने देवताओं को वचन दिया है कि तुम्हें मार दूँगा। मैं अपना वचन पूरा करके ही रहूँगा।" विष्णु ने कहा।

दोनों युद्ध करने लगे। माल्यवन्त ने विष्णु और गरुत्मन्त को बहुत तंग किया। परन्तु जब गरुत्मन्त ने अपने पंख खोलकर फड़फड़ाये, तो एक ऐसी आन्धी आयी कि माल्यवन्त आकाश में उड़ गया।

यह देख सुमाली, अपनी सेना के साथ लंका भाग गया। माल्यवन्त जैसे तैसे अपनी सेना से मिला और अपमानित होकर, लंका पहुँचा।

इसके बाद विष्णु ने लंकावासी राक्षसों से कई युद्ध किये। कई राक्षस वीरों को मारा।

जो राक्षस मरने से बच गये थे, वे अपनी पत्नी और बच्चों के साथ लंका छोड़कर, पाताल में जाकर, वहाँ रहने लगे। उन्होंने सुमाली को अपना नेता चुना। उस समय माल्यवन्त जैसे, जो

राक्षस मारे गये थे, वे कुम्भकर्ण आदि से अधिक बलवान थे।

जब राक्षस लंका को छोड़कर चले गये तब वैश्रवण (कुबेर) लंका में फिर रहने लगे।

कुछ समय बीता। एक दिन सुमाली अपनी लड़की कैकसी के साथ, पाताल से भूलोक में टहलने आया। वे जब भूमि पर घूम रहे थे उन्होंने कुबेर को पुष्पक विमान में सवार होकर, अपने पिता को देखने जाते देखा।

कुबेर के ऐश्वर्य से अपनी दुस्थिति की तुलना करके, सुमाली ने सोचा—"क्या करने से हमारी उन्नति होगी?" उसे एक बात सूझी। उसने लक्ष्मी-सी अपनी लड़की से कहा—"बेटी, अब तुम्हारी उम्र शादी के लायक हो गई है। तुमसे विवाह करने की इच्छा रखनेवाले बहुत-से हैं। पर मुझे डर है कि शायद तुम न मानो। विश्रवसु के लड़के कुबेर का वैभव तो तुमने अपनी आँखों देख ही लिया है। विश्रवसु पुलस्त्य का लड़का है। महामुनि है। यदि तुमने उनकी सेवा की, तो तुम्हारे भी वैसे ही लड़के होंगे।"

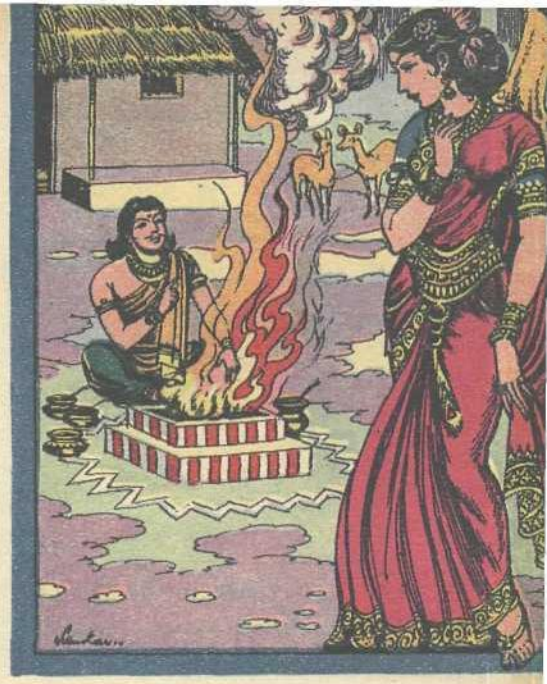

कैकसी पिता का लिहाज करके विश्रवसु जहाँ तपस्या कर रहा था, वहाँ जाकर खड़ी हो गई। उस समय विश्रवसु अग्नि की अर्चना कर रहा था।

पूर्ण चन्द्रमा-सी कैकसी को देख कर, विश्रवसु ने कहा—"सुन्दरी! तुम किसकी लड़की हो? कहाँ से आयी हो? किस काम पर आयी हो?" सच बताओ।"

कैकसी ने हाथ जोड़कर कहा—"मुनीश्वर! आप अपनी तपःशक्ति से सब कुछ मालूम कर सकते हैं। मैं अपने

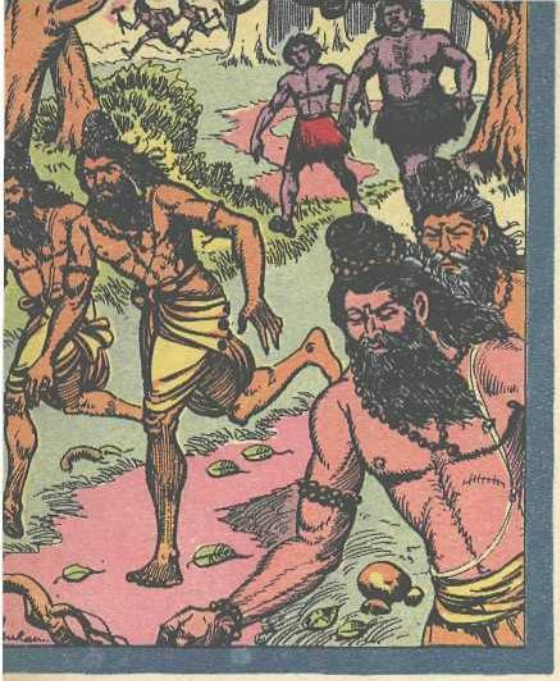

पिता की आज्ञा पर यहाँ आयी हूँ। मेरा नाम कैकसी है।"

"हाँ, पता लग गया। तुम मुझसे पुत्र प्राप्ति चाहती हो।" यह कहकर, विश्रवसु नें उससे यथाविधि विवाह किया।

"तुम राक्षस घड़ी में सन्तान की इच्छा से आयी हो। इसलिए तुम्हारे बहुत ही भयंकर दारुण राक्षस पुत्र होंगे।". उसने कहा।

"आप जैसे तपस्वी के ऐसे पुत्र होंगे? मुझे नहीं चाहिए। मुझे कृपा करके अच्छे पुत्र दीजिए।" कैकसी ने कहा। उसके बहुत प्रार्थना करने पर विश्रवसु ने कहा—"अच्छा, तो तुम्हारा छोटा लड़का, तुम्हारे वंश के अनुरूप होगा।"

कुछ दिनों बाद कैकसी के एक लड़का हुआ। वह बड़ा कुरूपी था। राक्षस रूप, भयंकर आकृति, दस सिर, बड़े बड़े दान्त। काला रंग। लाल लाल होठ। बीस हाथ। बड़े बड़े मुख। उसके दस शरीर देखकर विश्रवसु ने उसका नाम दशग्रीव (दस गलोंवाला) रखा। वह ही रावण था।

रावण के बाद कुम्भकर्ण पैदा हुआ। वह महा बलशाली था। उसका शरीर इतना बड़ा था कि किसी पशु का भी उतना बड़ा शरीर न होगा। उसके बाद, कुरूपी शूर्पनखा पैदा हुई। सबसे अन्त में विभीषण हुआ। वह अच्छे गुणोंवाला था। सज्जन था।

रावण और कुम्भकर्ण जंगल में ही बड़े होने लगे। उनके असाधारण बल के कारण, सब भयभीत रहने लगे। कुम्भकर्ण ऋषियों को पकड़कर खा लिया करता। विभीषण स्वाध्याय करता, नियमित आहार करता, अच्छे मार्ग पर रहने लगा।

वे, सब जब आश्रम में थे, तो एक बार कुबेर, पुष्पक पर सवार होकर, अपने पिता को देखने आया। कुबेर के तेज़, ऐश्वर्य को देखकर, कैकसी जली। उसने अपने बड़े लड़के से कहा—"तुमने उस कुबेर का वैभव देखा? तुम भी उसी पिता के लड़के हो और अपने को देखो? तुम में भी बहुत बल है। मैं तभी सन्तुष्ट होऊँगी, जब मेरा लड़का भी कुबेर के समान होगा।"

रावण ने बिना खान पान के, दस हज़ार वर्ष तपस्या की। हर हज़ारवें वर्ष उसने एक सिर को काटकर, आहुति दी। उसके दस सिरों में, नौ आहुति हो गये। एक रह गया, दस हज़ार वर्ष पूरे होने पर, वह दसवाँ सिर आहुति देनेवाला था कि ब्रह्मा दिक्पालकों के साथ आया। उसने कहा—"दशग्रीव, मैं तुम्हारी तपस्या पर बहुत सन्तुष्ट हूँ। जो तुम वर चाहो, वह माँगो।"

रावण ने परमानन्दित होकर, साष्टान्ग नमस्कार करके ब्रह्मा से कहा—"प्राणियों को मृत्यु भय से बढ़कर कोई भय नहीं है। यह वर दो कि मैं कभी न मरूँ।"

"ऐसा वर तो मैं नहीं दे सकता, कोई और वर माँगो।" ब्रह्मा ने कहा।

"मुझे और प्राणियों का तो भय नहीं है। यह वर दो कि सुवर्ण, नाग, यक्ष, दैत्य, दानव, राक्षस, देवता आदि से मेरी मृत्यु न हो। मनुष्य आदि, तो मेरे लिए तिनके के समान हैं।" रावण ने कहा।

रावण की इच्छानुसार, ब्रह्मा ने वर दिया, साथ उसने यह भी वर दिया कि उसके दस सिर यथापूर्व आ जायें और जब वह जैसा रूप चाहे, उसे मिले।

फिर ब्रह्मा ने विभीषण से भी वर माँगने के लिए कहा। विभीषण ने वर माँगा कि कभी उसका मन, धर्म से विचलित न हो और जब वह चाहे, उसे ब्रह्मास्त्र मिले। ब्रह्मा ने उसको वह वर दिया। उसे भी अमरता का वर दिया।

फिर वर पाने की बारी कुम्भकर्ण की थी। देवताओं ने ब्रह्मा से कहा—"देवता! कुम्भकर्ण को वर मत दो। क्या तुम नहीं जानते कि यह कितना भयंकर है? नन्दन वन में विचरनेवाली सात अप्सराओं को यह निगल गया। देवेन्द्र के दस अनुचरों को खा गया। न मालूम कितने ही ऋषियों और मुनियों को खा गया है। बिना वरों के ही जब इसकी ये हरकतें हैं, तो वर पाकर, न मालूम क्या उत्पात करे।"

यह सुन ब्रह्मा ने सरस्वती का स्मरण करके, उनको बुलवाया। उसने उससे कुम्भकर्ण के वाक्स्थान को वश में करने के लिए कहा। फिर उसने कुम्भकर्ण को देख कर, कहा—"तुम जो वर चाहो, माँगो।"

सरस्वती के प्रभाव के कारण, कुम्भकर्ण ने कहा—"मुझे बरसों सोते रहने के लिए वर दो।" ब्रह्मा "तथास्तु" कहकर अदृश्य हो गया। कुम्भकर्ण की जीभ से सरस्वती भी उतर आयी।

तुरत कुम्भकर्ण को ऐसा लगा, जैसे होश आ गया हो। "छी, छी, क्यों मैंने ऐसा वर माँगा? देवताओं ने मिलकर, मुझे धोखा दिया है।" वह पछताने लगा।

रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण, ब्रह्मा से इस प्रकार वर पाकर, श्लेष्मात्मक वन में जाकर, वहाँ रहने लगे।

शुम्भ निशुम्भ

[२]

भाई के भरण-पोषण का भार निशुम्भ पर पड़ा। दोनों के ही बड़े पेट थे। उनकी भूख भी मामूली न थी। निशुम्भ नाना कष्ट उठाकर खाना लाता। आखिर तंग आकर उसने कहा—"मैं अब से तुम्हें खाना नहीं दूँगा।"

"नहीं, तुम्हें, मुझे खाना देना ही होगा।" शुम्भ ने कहा।

"इस तरह मेरे सहारे जीने के बदले अपने सिर का सींग निकालकर क्यों नहीं मर जाते?" कहते हुए निशुम्भ ने भाई के सिर पर हाथ रखा। उन दोनों के सिर के बालों के नीचे सींग थे। उनमें ही उनके प्राण थे।

शुम्भ पर खतरा आ पड़ा। उसका एक ही हाथ था। यदि मुठभेड़ होती, निशुम्भ उसे आसानी से मार देता। "अरे निशुम्भ, तुम मुझे इसीलिए न मार रहे हो, क्योंकि मुझे खाना देना पड़ रहा है? मैं भी देखूँगा कि तुम मुझे बिना दिये कैसे खाते हो? जब तक तुम नहीं मरोगे, तब तक मैं भी नहीं मरूँगा। देखते रहना।" कहते हुए शुम्भ ने अपना शरीर छोटा कर लिया। निशुम्भ के मुख से उसके पेट में जा घुसा और वहाँ आराम से बैठ गया। निशुम्भ लाचार हो गया। जो कुछ वह खाता, शुम्भ ले लेता। खाना न होने के कारण तो कमज़ोर था ही और इधर पेट फूलकर भारी हो गया था। चाहे जितना भी खाता, पर उसकी अपनी भूख बिल्कुल न मिटती। यदि वह खुद भूखा

अन्तिम पृष्ठ

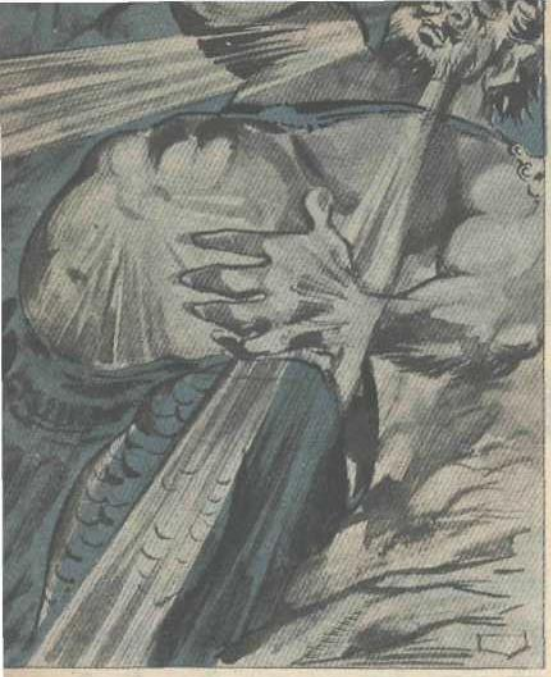

रहकर भाई को भूखा रखता तो वह लातें मार मारकर पेट की बुरी हालत कर देता।

निशुम्भ को लगा, बिना शुम्भ को मारे कोई और उपाय न था। उसने सोचा, यदि उसने न खाने की ठानी, तो सम्भव है कि शुम्भ बाहर निकल आये। बाहर निकलने पर वह उसे मार सकता था। नहीं तो वह उसके हाथ मारा जा सकता था। इन सबके लिए तैयार होकर निशुम्भ भूखा लेट गया। अन्दर शुम्भ बुरी तरह उसको लात मार रहा था। जब निशुम्भ ने एक बार जोर से साँस ली, तो तिनके जितना एक आदमी निशुम्भ के पास आया। निशुम्भ ने उस आदमी को देखकर कहा—"कौन हो तुम? क्यों आये हो?"

"मैं आया हूँ? तुम ने ही मुझे साँस में बाहर निकाला है। अब क्या है, मुझे खा लो। इसीलिए तो तुमने मुझे बाहर खींचा है।" तिनके-से आदमी ने कहा।

"तुम्हें खाने से क्या मेरी भूख मिट जायेगी? पर तुम क्यों मरना चाहते हो?" निशुम्भ ने पूछा।

"मेरा नाम तृणान्ग है। मेरी कथा यदि तुमने सुनी, तो तुम ही जान जाओगे कि मैं मरने के लिए क्यों तैयार हूँ?" उस आदमी ने कहा।

तृणान्ग जब से पैदा हुआ था, तब से तिनके की तरह ही बड़ा हुआ था। उसमें बिल्कुल बल न था। हवा में उड़ जाया करता था। जिस हाथ से फूल पकड़ता, उस ओर झुक जाया करता। कुछ समय बाद तृणान्ग ने विवाह करना चाहा। उसने जिस लड़की के साथ शादी करने की सोची थी, उसके पिता से बात की। उसने तृणान्ग को एक फूलों की माला दिखाकर कहा—"यदि तुमने इसे एक हाथ से उठा लिया

तो मैं अपनी लड़की की शादी तुम से कर दूँगा।" तृणान्ग माला न उठा सका। उसकी मज़ाक उड़ाई गई। यह सोच, उस तरह अपमानित होकर, जीने से यही अच्छा था कि जंगल में राक्षसों द्वारा खा लिया जाऊँ मैं इस तरफ़ चला आया, उसने कहा।

यह सुनाकर तृणान्ग ने निशुम्भ से कहा कि जो तुम्हारे श्वास में बल है, उसका अगर एक हिस्सा भी मुझ में होता, तो मैं भी शादी करके आराम से रहता।

निशुम्भ ने कुछ देर सोचकर, तृणान्ग से कहा—"यदि तुमने मेरी एक सहायता की, तो मैं अपना सारा बल तुम्हें दे दूँगा। मेरे पेट में मेरा भाई है, वह मुझे बड़ा तंग कर रहा है। वह अब नहीं, तो कुछ देर बाद, बाहर निकल आयेगा। तुम उसे मार देना। उसके प्राण उसके सिर के सींग में हैं। यदि तुमने उसे उखाड़ा, तो वह मर जायेगा। उसे मारने के लिए मैं अपना सारा बल तुमको देकर खुद कमज़ोर हो गिर जाऊँगा। इसलिए बाहर आते ही वह मेरे सिर का सींग खींचकर, मुझे मारने की कोशिश करेगा। तुम उसे यह न करने देना। उसे खींचकर तुम उसे मार देना। उसके

मरने के बाद, मेरा बल मुझे वापिस दे देना। क्या तुम यह काम कर सकोगे?"

"जो मरने को तैय्यार हो, उसे डर किस बात का?" तृणान्ग ने कहा।

निशुम्भ ने तृणान्ग के शरीर पर हाथ रखा। तृणान्ग को ऐसा लगा, जैसे उसमें बहुत बल आ गया हो। निशुम्भ कमज़ोर हो गिर गया। थोड़ी देर में शुम्भ भूख न सह सका और अपने छोटे भाई के शरीर में से बाहर निकल आया। उसने गिरे हुए निशुम्भ से पूछा—"उठो, खाना लाते हो कि नहीं लाते हो?"

निशुम्भ ने आह भरी। इतने में तृणान्ग, शुम्भ पर बिजली की तरह पड़ा। एक लात में, उसने शुम्भ को गिरा दिया। उसके सिर का सींग निकालकर, उसे मार दिया। शुम्भ ने प्राण छोड़ते हुए तृणान्ग से कहा—"उसे भी इसी तरह मार दो। नहीं तो वह तुम्हें निगल जायेगा।" तृणान्ग को भी यह काम ठीक जँचा। उसने इन राक्षसों के हथकण्डों के बारे में यह सुन रखा था। वह भी जानता था कि कैसे इन्होंने नृग महाराजा की सेना को मारकर खा लिया था। उन जैसों को जीवित छोड़ना खतरनाक था। यह सोच तृणान्ग ने निशुम्भ के सिर का सींग निकालकर उसे भी मार डाला। बड़े बड़े बलशाली समय आने पर, जैसे मुनियों ने कहा था, तिनके जैसे आदमी के हाथ मारे गये। तृणान्ग अब बलवान होकर घर गया। राक्षसों को मारने कारण, राजा ने उसका सम्मान किया। वह जिस कन्या से विवाह करना चाहता था, उससे विवाह करके सुख से रहने लगा।

संसार के आश्चर्य :

४६. सेन्ट सोफिया चर्च

इस्ताम्बूल में १४ सौ वर्ष पहिले बनाये गये इस बैजान्टाईन चर्च में, बैजान्टाईन सम्राटों ने वैभवपूर्वक अपना राज्याभिषेक करवाया था। जब कान्सिटन्टनोपल पर मुसलमानों का अधिकार हो गया, तो इसको मस्जिद बना दिया गया। १९३४ में, कमालपाशा ने इसको कलाओं का संग्रहालय बना दिया।